डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2024-2026

समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

पवमान

(मासिक)

वर्ष : 37 आषाढ़-श्रावण वि०सं० 2082 अंक : 7 जुलाई 2025

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून

वजन: 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून के ग्रीष्मोत्सव 2025 के अवसर पर आयोजित शोभायात्रा

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

karix
connect · interact

Transforming the way businesses communicate & interact with their customers

Karix empowers organisations to enable smarter, relevant, and personalised conversations with their customers and create seamless customer experiences, across the globe. Purpose-built for enterprises, Karix offers a rich suite of communication channels with superior security standards, unmatched customer support and a reliable cloud-based platform to support all communication needs.

21+
years of industry experience with a stronghold in all major industries

2,000+
Enterprise customers

100+ BN
Omni-channel messages processed annually

24x7
Support provided by over 200 engineers

10,000+
Business processes supported

CUSTOMER ENGAGEMENT SOLUTIONS SUITE

- WhatsApp
- A2P Messaging
- Email
- RCS
- Voice
- Marketing Automation
- Campaign Automation
- Chatbots
- Live Agent Chat

WHY DO FORTUNE 1000 BUSINESSES PREFER KARIX?

- Best in class connectivity
- High available systems
- Hybrid cloud infrastructure
- Deep domain understanding

For more details, visit us at www.karix.com or write to us at marketing@karix.com

ओ३म्

पवमान

वर्ष–37 अंक–7

आषाढ़–श्रावण विक्रमी 2082 जुलाई 2025

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,126 दयानन्दाब्द : 201

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–

श्री विजय कुमार

मो. : 9837444469

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व० श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

★

–: सहायक सम्पादक :–

अवैतनिक

मनमोहन कुमार आर्य

मो. : 9412985121

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

मोबाईल : 8439605977

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	2
प्रश्नोपनिषद् में प्राणविद्या का महत्त्व	डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	3
प्रथममण्डलम्–तृतीयसूक्तम्	डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	7
कौन चैन की नींद नहीं सो सकते.......	आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार	9
सिन्दूर का रंग	डॉ. वेदपाल, संपादक पाक्षिक परोपकारी	11
विश्व समुदाय द्वारा वेदों की उपेक्षा......	मनमोहन कुमार आर्य	14
ईश्वर की उपासना व ध्यान करने से......	मनमोहन कुमार आर्य	17
सदस्यता हेतु विवरण		19
दानदाताओं की सूची		21
वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुलम्.....	आचार्य रवीन्द्र कुमार आर्य, प्रधानाचार्य	24
तपोवन विद्या निकेतन, नालापानी, देहरादून		25
वैदिक साधन आश्रम तपोवन का ग्रीष्मोत्सव	मनमोहन कुमार आर्य	26
वेदों में आत्मत्व	संकलनकर्त्ता–पं. महेन्द्र कुमार आर्य	30

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	
आश्रम को दान देने के लिये			
1. ''वैदिक साधन आश्रम''	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530 CNRB0002162	SCAN & PAY
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. ''पवमान''	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169 CNRB0002162	SCAN & PAY
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
3. ''तपोवन विद्या निकेतन''	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171 UBIN0560243	
वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुल को दान देने के लिये			
4. ''वैदिक साधन आश्रम''	पंजाब नेशनल बैंक ब्रांच देहरादून	00022010029560 PUNB0000210	SCAN & PAY

VEDIC SADHAN ASHRAM SOCIETY PAN : AAAAV1656L

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1. वार्षिक मूल्य — रु. 200/– वार्षिक
2. वार्षिक मूल्य रजिस्ट्री सहित — रु. 600/– वार्षिक
3. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य — रु. 2000/–

नोटः पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

सम्पादकीय

धर्म का आचरण

धैर्य, क्षमा, संयम, चोरी न करना, पवित्रता और इन्द्रिय निग्रह आदि को धर्म के दस लक्षण बताया गया है। इन लक्षणों को जीवन का अंग बना लेना ही धर्माचरण है। कर्मों की पवित्रता ही सच्चा पूजापाठ और कर्मकाण्ड है। ऐसा सत्य आचरण ही वास्तविक धर्म है। सदाचार को धर्म मान लेने के बाद, यह व्यावहारिक प्रश्न उठता है कि हम धर्म-अधर्म का निश्चय कैसे करें ? इसका समाधान करते हुए महर्षि मनु ने कहा है कि वेद ओर वेदानुकूल आचरण करने वाले महापुरुषों द्वारा रचित स्मृति आदि ग्रन्थ, सत्याचरण करने वाले पुरुषों का आचरण और आत्मा को प्रिय लगने वाला व्यवहार आदि बातों से धर्म-अधर्म का निश्चय किया जा सकता है। संसार में ऐसे बहुत से लोग हैं जो सब शास्त्रों का ज्ञान तो रखते हैं परन्तु उन्हें जीवन में अपनाते नहीं हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि उनके संस्कार इतने दूषित होते हैं कि वे अहंकार, क्रोध, लोभ, मोह और इन्द्रिय सम्बन्धी विकारों के कारण सदाचार के मार्ग पर चलने में असमर्थ महसूस करते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो धर्म के तत्त्वों के विषय में सैद्धान्तिक रूप से कोई जानकारी नहीं रखते परन्तु उनका अन्तःकरण पवित्र होता है। ऐसे लोगों के संस्कार इतने दृढ़ होते हैं कि उनका जीवन धर्माचरण से परिपूर्ण होता है। ज्ञान और अनुभव की तुलना करें तो अनुभव अधिक महत्त्वपूर्ण है। वेदों और शास्त्रों को पढ़कर यदि कोई व्यक्ति जीवन में उन नियमों को नहीं अपनाता है तो वह ज्ञान एक प्रकार का बोझ है। इसलिए सत्य धर्माचरण की कसौटी ज्ञान नहीं है, अपितु व्यावहारिक जीवन में धर्माचरण से सम्बन्धित बातों पर अमल करना है। ऋषियों द्वारा प्रतिपदित सिद्धान्तों से भी अनेक बार कई व्यक्ति सन्तुष्ट नहीं होते हैं और उनके मन में किसी बात को स्वीकार करने के विषय में शंका बनी रहती है। ऐसी स्थिति में परमेश्वर की प्रेरणा से अन्तःकरण से जो आवाज सुनाई पड़ती है, उसी से धर्मानुकूल निर्णय लेने में सहायता मिलती है। इसे आत्म-संतुष्टि कहते हैं। इस दृष्टि से जिस कार्य को करने में आत्मा में कोई भय या शंका नहीं रहती है, उसी को धर्मानुकूल मानना चाहिए। महर्षि दयानन्द ऋ०भा०भू० में लिखते हैं कि मनुष्य को यह करना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्यों में जितना सामर्थ्य रखा है, उतना पुरुषार्थ अवश्य करें। उसके उपरान्त ईश्वर की सहाय की इच्छा करनी चाहिए, क्योंकि मनुष्यों में सामर्थ्य रखने का ईश्वर का यही प्रयोजन है कि पुरुषार्थ से ही सत्य का आचरण अवश्य करना चाहिए। जैसे कोई मनुष्य आँख वाले पुरुष को ही कोई चीज दिखला सकता है, अँधे को नहीं, इसी रीति से जो मनुष्य सत्यभाव, पुरुषार्थ धर्म को किया चाहता है, उस पर ईश्वर भी कृपा करता है, अन्य पर नहीं। क्योंकि ईश्वर ने धर्म को करने के लिए बुद्धि आदि को बढ़ने के साधन जीव के साथ रक्खे हैं। जब जीव उनसे पूर्ण पुरुषार्थ करता है, तब परमेश्वर भी अपने सामर्थ्य से उस पर कृपा करता है, अन्य पर नहीं। क्योंकि सब जीव कर्म करने में स्वाधीन और पापों के फल भोगने में पराधीन भी हैं। उपनिषदों की शृंखला में इस अंक में प्रश्नोपनिषद् पर लेख सुधी पाठकों की सेवामें प्रस्तुत किया जा रहा है।

-डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

प्रश्नोपनिषद् में प्राणविद्या का महत्त्व

-डॉ० कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

यह उपनिषद् अथर्ववेद से सम्बन्धित है। भरद्वाज के गोत्र में उत्पन्न सुकेशा, शिबि का पुत्र सत्यकाम, सौर्य का पुत्र गार्ग्य, अश्वल का पुत्र कौशल्य, भृगुगोत्र में उत्पन्न बंदभि तथा कत्य का पुत्र कबन्धी- ये छः जिज्ञासु थे। उन्होंने यह तो समझ लिया था कि संसार में अन्तिम सत्ता ब्रह्म ही है- अर्थात्, वे 'ब्रह्म-पर' थे। इसीलिये उनकी ब्रह्म में निष्ठा थी, उसे पाने की उत्कंठा थी-अर्थात्, वे 'ब्रह्म-निष्ठ' भी थे, परन्तु अभी उनके हृदय में कुछ शंकाएं थीं। वे हाथ में समिधा लेकर ब्रह्म की खोज में प्रसिद्ध आचार्य पिप्पलाद के पास पहुँचे।

शिष्यों ने उनसे प्रार्थना की कि आप हमें ब्रह्मविद्या का ज्ञान दीजिए, इस पर पिप्पलाद ने उन्हें एक वर्ष तक आश्रम में रह कर तप और ब्रह्मचर्य का अभ्यास करने का आदेश दिया। पिप्पलाद ने एक वर्ष के बाद उत्तर देना स्वीकार किया। वहाँ रह कर सभी ने उनके आश्रम में तपस्या की। जब योग्यता प्राप्त हुई तो सबसे पहले कबन्धी कात्यायन ने पिप्पलाद से प्रश्न पूछा-गुरुवर्य। यह प्रजा किससे उत्पन्न हुई ? उस मिथुन की जोड़ी का नाम रथी और प्राण था, अतः सर्वप्रथम प्रजापति ब्रह्म ने मिथुन उत्पन्न किया। यहाँ एक मिथुन अथवा अनेक मिथुनों का उल्लेख नहीं है।

जिस तरह सृष्टि-उत्पत्ति की जिज्ञासा ऋषियों और मुनियों को थी उसी प्रकार आज के वैज्ञानिकों को भी है। चाहे वे अध्यात्मवादी हों, वास्तववादी हों या जड़वादी हों, यह प्रश्न आज तक ज्यों का त्यों मनुष्य के मन में बना हुआ है। इसी के उत्तर में पिप्पलाद ने कहा कि प्रजापति ने मिथुन उत्पन्न किये। सूर्य प्राण का प्रतीक है और चन्द्र रयि शक्ति का सूचक है। रयि और प्राण मिलकर ही सृष्टि में जीव की भोग्य और भोक्ता की शक्ति बढ़ाने वाले हैं। सूर्य से प्राण-शक्ति का संचार होता है और चन्द्र

इच्छा एवं भोक्ता की तृप्ति करने वाला है। इसी उपनिषद् में प्राणी और प्रजाएँ किससे उत्पन्न होती हैं? के उत्तर में पिप्पलाद अन्न को ही प्रजापति कहते हैं- अन्नंवै प्रजापति..... तस्माद् इमाः प्रजाः प्रजायन्त इति।।१.१४।।

पिप्पलाद ऋषि के अनुसार रयि और प्राण एक-दूसरे के पूरक और प्रजा की उत्पत्ति में सहायक हैं। उन्होंने कहा कि वीर्य प्राण है और प्रजा रयि है। दूसरे जिज्ञासु वैदर्भी ने दूसरा प्रश्न पूछा कि प्रजा की उत्पत्तिकेबाद इस सृष्टि को कौन धारण करता है? किसके सहारे यह सृष्टि टिकी हुई है ? यह शरीर किस शक्ति के कारण चेतनशील और गतिमान है? पिप्पलाद ने उत्तर दिया- आकाश, वायु, जल, पृथ्वी, वाणी, मन, चक्षु और कान ये नौ इन्द्रियाँ ही शरीर को धारण करती हैं, इनमें दसवाँप्राण सर्वोपरि है। ''**प्राणस्येदं वशे सर्वं त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम्**''। (२.१३) इसके पश्चात् कौशल्य आश्वलायन ने पूर्व सूत्र के धागे को पकड़कर पिप्पलाद गुरु से प्रश्न पूछा- भगवन्। यह प्राण किस तत्त्व से उत्पन्न होता है? और वह इस शरीर में कैसे आता है? इस प्रश्न का उत्तर ऋषि ने इस तरह दिया-''**आत्मन एष प्राणो जायते। यथैषा पुरुषे छायैतस्मिन्नेतदा ततं**

मनोऽधिकृतेनायात्यस्मिछंरीरे''।। ३.२-३ ।। अर्थात्- प्राण आत्मा से ही उत्पन्न होता है। जिस प्रकार देह के साथ छाया बराबर रहती है, उसी तरह आत्मा के साथ प्राण रहता है। मन के द्वारा किये गये पूर्व कर्मों के साथ वह (आत्मा) देह में आता है। इसके बाद गार्ग्य ने ऋषिवर पिप्पलाद से चौथा प्रश्न किया-भगवन्! शरीर में कौन सी इन्द्रियाँ नींद लेती हैं? कौन सी जागती रहती हैं? कौन सा देवता स्वप्न देखता है? और सुख का कौन उपभोग करता है? इस प्रश्न का उत्तर पिप्पलाद ने इस प्रकार दिया- निद्रा के समय सभी इन्द्रियाँ अपने-अपने विषयों के साथ अपने से श्रेष्ठ मन में लीन रहती हैं। इस अवस्था को सुषुप्ति कहते हैं। जागते रहने की बात आती है तो प्राण देहरूपी नगरी में जागते हैं, मन स्वप्नों का अनुभव लेता रहता है। जिस प्रकार पंछी अपने निवास वृक्ष पर एकत्र जमा हो जाते हैं, उसी प्रकार पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश और उनकी तन्मात्राएँ और उनके विषय, इत्यादि सभी आत्मा के स्थान पर इकठ्ठा होते हैं और लीन होकर विश्राम लेते हैं। ये सभी एक-दूसरे को आश्रय देकर ऊर्जा से परिपूर्ण हो जाते हैं।

उसके बाद सत्यकाम ने पाँचवाँ प्रश्न किया। महात्मन्! जो कोई मृत्यु पर्यन्त ध्यान करता है, वह किस लोक को जीतता है? पिप्पलाद ऋषि ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा- जो मनुष्य ब्रह्मचर्य और श्रद्धा से ब्रह्म के आनन्द को प्राप्त करता है। जो ज्ञानी व्यक्ति यम-नियम आदि योग के नियमित कर्त्तव्यों के द्वारा ओङ्कार का स्मरण करता हुआ सांसारिक सुख का परित्याग कर ओङ्कार शब्द के द्वारा ब्रह्म की उपासना करता है, वही मनुष्य ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है, अर्थात्-मोक्ष को प्राप्त करता है। अ, उ, म् के जाप से वह ब्रह्मज्ञानी उन्नत लोक को प्राप्त करता है। ओङ्कार की तीन मात्राओं को जागृत्, सुषुप्ति अवस्था में ध्यान करता हुआ विचलित नहीं होता है। इसके पश्चात् सुकेशा ने अन्तिम छठा प्रश्न पूछा, जो इस प्रकार है- षोडश कलाओं वाला पुरुष कौन है? और कहाँ रहता है ? पिप्पलाद ने कहा- हे सौम्य! सोलह कलाओं वाला पुरुष अपने शरीर के भीतर ही रहता है। ये सोलह कलाएँ उसी पुरुष तक ले जाने वाली होती हैं। ज्ञानी लोग कहते हैं कि उस पुरुष तक जाकर वे उसके साथ एकरूप हो जाती हैं। अर्थात् परमात्ममय हो जाती हैं। इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है कि अपने शरीर में जो गतिशीलता और अन्तर्व्यवहार है, उसको गति देनेवाली शक्ति और विश्व का व्यवहार, और उसका संचालन करने वाली शक्ति दोनों एकरूप हो जाती हैं, ऐसा ज्ञानी लोगों का अनुभव है। उसका स्थान अपने हृदय में होने से अपनी वृत्तियाँ अन्तर्मुख होकर हृदय में केन्द्रित होने योग्य बन जाती हैं, अथवा योग्य बननी चाहिएँ। यही इस प्रश्न के उत्तर का सार है। इस प्रकार प्रश्नोपनिषद् में छहों जिज्ञासुओं ने अत्यन्त क्लिष्ट एवम् आवश्यक प्रश्नों को पूछकर जगत् के जिज्ञासुओं की आत्माओं को तृप्त कर दिया।

प्राण शब्द प्र उपसर्गपूर्वक अन् धातु से अच् अथवा घञ् प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न होता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- जीवन की साँस, जीवनशक्ति, जीवनदायी वायु, जीवन का मूल तत्त्व आदि। प्राण को अंग्रेजी में (Energy) कहा जाता है, किन्तु प्राण के लिए अधिक उपयुक्त शब्द होगा ''Psychic Energy'' जिसका प्रयोग प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक युग ने किया है। ''जिसमें 'Psychic''का अर्थ असाधारण शक्तियों वाला और इन्द्रियातीत ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच से बाहर (जैसे दूसरे

के मन को पढ़ लेना) तथा ''Energy'' का अर्थ होता है- बिना थके अत्यधिक श्रम करने की क्षमता। प्राण ही सबका ईश्वर है, वह सर्वशक्तिमान् है तथा सभी के बलों को नित्य बढ़ाता है। इतना ही नहीं अग्नि को पृथ्वी स्थानीय, वायु को अन्तरिक्ष स्थानीय और सूर्य को द्युस्थानीय देवता माना गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार अग्नि भी प्राण है। ''वायु भी प्राण है तथा आदित्य भी प्राण है प्राण ही अक्षय अथवा अमृत है प्राण निरन्तर गतिशील रहते हैं। प्राण से अधिक कुछ भी प्रिय नहीं है।'' प्राण ही समस्त अंगों की रक्षा करता है। ''प्राण से केवल मनुष्य और पशु ही नहीं अपितु देवता भी जीवित रहते हैं।'' जितने भी देवता, मनुष्य, पशु आदि शरीरधारी प्राणी हैं, वे सब प्राण के ही सहारे जी रहे हैं। प्राण के बिना किसी का भी शरीर नहीं रह सकता, क्योंकि प्राण ही सभी प्राणियों का आयु जीवन है, इसलिए प्राण सर्वायुष कहलाता है।

सूर्य चन्द्रमा और प्रजापति भी प्राण ही हैं। गर्भ में रहता हुआ पुरुष प्राण और अपान व्यापार को करता है और जब प्राण उसे प्रेरणा देता है तब वह जन्म लेता है। ऋषियों ने प्राण को मातरिश्वा कहा है तथा निश्चित किया है कि जो हो चुका है और जो होने वाला है वह सब प्राण विषयक तथ्य है।

पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पंचमहाभूत और अन्तःकरण इन सब में सबसे श्रेष्ठ प्राण है। ''ये सभी प्राण की स्तुति करते हैं तथा सर्वश्रेष्ठ प्राण को ही मानते हैं, यही प्राण अग्नि रूप को धारण करता है, यही सूर्य, मेघ, इन्द्र और वायु है। यही देव, पृथ्वी और रयि (भूत समुदाय) है तथा सत् एवं असत् तथा उससे भी श्रेष्ठ जो अमृत स्वरूप परमात्मा है। वह भी यह प्राण ही है।'' ऋग्वेद की सभी ऋचाएँ, यजुर्वेद के समस्त मन्त्र, सम्पूर्ण सामवेद, यज्ञादि शुभ कर्म आदि सबका आश्रय प्राण ही है। ''मुण्डकोपनिषद् के अनुसार निराकार परब्रह्म से ही इस जगत् की रचना हुई है। उन्हीं परब्रह्म परमेश्वर से सात प्राण (दो नेत्र, दो श्रोत्र, दो घ्राण तथा जिह्वा) उत्पन्न हुए। इन सात इन्द्रियों से सात वृत्तियाँ, जो अपने-अपने विषयों को प्रकाशित करने वाली होने के कारण सात दीप्तियाँ हैं। सात-सात प्राण प्रत्येक प्राणी के शरीर में विधाता स्थापित करता है।'' अथर्ववेद में उल्लेख किया गया है कि आकाशरूपी समुद्र से निकलता हुआ हंस एक पाँव को स्थिर रखकर शेष एक पाँव से भ्रमण करता है। यदि वह उसे भी उठा ले तो न आज हो, न कलय न दिन हो न रात। यथा- **एकपादं नोत्खिदति सलिलाद्धस उच्चरन्। यदङ्ग स तमुत्खिदेन्नैवाद्य न श्वः स्यान्न रात्री नाहः स्यान्न व्युच्छेत् कदाचन।''**

'हन्ति गच्छति इति हंसः सूर्यः',अथवा **हन्ति गच्छति कृत्स्नशरीरं व्याप्य वर्तते इति हंसः प्राणः** इस व्युत्पत्ति के अनुसार प्राण को भी हंस कहा जा सकता है। तब मन्त्र का अर्थ होता है- प्राण सलिलोपलक्षित पाँच भौतिक शरीर से श्वासोच्छ्वास के रूप में बाहर नहीं निकलता हुआ भी अपाववृत्यात्मक वाले एक पांव को बाहर नहीं निकालता। यदि वह उसे भी शरीर से बाहर निकाल ले, तब प्राण के पूर्णतया बाहर निकल जाने पर उस मरे हुए शरीर के लिए आज-कल, रात-दिन आदि का व्यवहार समाप्त हो जायेगा।

प्राण का अनुकरणात्मक नाम 'हंसः' कहा गया है क्योंकि जब मनुष्य श्वास बाहर निकालता है तो 'ह' की ध्वनि निकलती है और जब अन्दर की ओर खींचता है तो 'स' की ध्वनि निकलती है।

इसी 'हस' शब्द को जब उलटकर बोला जाता है तो वेदान्त प्रतिपाद्य 'सोऽहं' की विलक्षण ध्वनि बन जाती है, जिसका जाप करने से मनुष्य आत्मस्वरूप को प्राप्त कर लेता है। उक्त मन्त्र में प्राण रूप हंस आत्मा से अभिन्न-सा ही पदार्थ है। जब तक शरीर में प्राण है तब तक आत्मा रहती है अथवा जब तक शरीर में आत्मा रहती है तभी तक प्राण रहता है अतः प्राण और आत्मा अत्यन्त संयुक्त हैं। श्वेताश्वतरोपनिषद् में भी प्राण के स्थान पर हंस का उल्लेख किया गया है।

प्रश्नोपनिषद् में वर्णित है कि प्राण की उत्पत्ति आत्मा से होती है तथा मरते समय प्राणी के मन में जैसा संकल्प होता है उसे वैसा ही शरीर मिलता है अतः प्राणों का शरीर में प्रवेश मनः संकल्प के द्वारा होता है। साथ ही साथ यह प्राण चक्रवर्ती सम्राट् की भाँति शरीर के विभिन्न अंग स्वरूप को अपने-अपने कार्यों में नियुक्त करता है। ''बृहदारण्यक उपनिषद् में स्पष्ट उल्लेख है कि प्राण ही बृहस्पति है क्योंकि बृहती नाम वाणी का है और वाणी का पति यह प्राण है इसलिए बृहस्पति कहलाता है।''

प्राण का स्थान हृदय में है, जिसका सम्बन्ध पार्थिव नाड़ियों से है। कण्ठ में उदान है, जिसका सम्बन्ध व्योम नाड़ी से है। नाभि समान है, उसका सम्बन्ध वायव्य नाड़ी से है। गुदा में अपान है, जिसका सम्बन्ध जलीय नाड़ी से है। इसके अतिरिक्त प्राण अलग-अलग सभी नाड़ियों में संचरण करता है। प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय प्राण के विभिन्न रूप हैं। इनमें प्राण के पाँच प्रकार- प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान प्रमुख हैं। ''पंचभूतों से जुड़ी पाँच नाड़ियों की चार सन्धियाँ हैं- नाभि से हृदय के बीच नाग प्राण है। मूलद्वार से नाभि पर्यन्त तक एक प्रदेश है। इसके बीच कूर्म प्राण रहता है। हृदय से कण्ठ के बीच कृकल प्राण है। कण्ठ से ब्रह्मरन्ध्र के बीच देवदत्त प्राण है। ये चारों ऋत प्राण हैं। ये प्राण और अपान के बीच स्थित रहते हैं प्राण और अपान दोनों सत्य प्राण हैं। इस प्रकार सत्य के बीच ऋत प्राण है। इन पांचों प्राणों को धनञ्जय नामक ऋत प्राण ने अपने में समेट रखा है। नाग का काम उद्‌गार है। कूर्म का कार्य निमेषोन्मेष। कृकल भूख और प्यास का कारण है। देवदत्त जृम्भा का कारण है तथा पोषणकर्त्ता का कारण धनञ्जय होता है।'' आत्मा के केन्द्रित तथा व्यक्तित्त्व के विकास एवं आत्मोन्नति का कारण प्राण ही होता है।''

प्राण के द्वारा ही ओषधियाँ गर्भ धारण करती हैं, तेजस्वी और उत्पन्न होती हैं। प्राण ऋतुकाल आने पर ओषधियों की वर्षा करके आनन्दित करता है। प्राण ओषधियों की आयु बढ़ाते हैं, उनको सुगन्धित करते हैं। यथा- ''**अभिवृष्टा ओषधयः प्राणेन समवादिरन्। आयुर्वै नः प्रातीतरः सर्वा नः सुरभीरकः।।**'' अर्थात् ओषधियों पर वर्षा होने के अनन्तर ओषधियाँ प्राण के प्रति कृतज्ञ होकर प्राण से कहने लगीं निश्चय ही तूने हमारी आयु को बढ़ाया है और हम सबको तूने सुगन्धित कर दिया है और हे प्राण! जब वर्षा के द्वारा तुम भूमण्डल को तृप्त करते हो तब अधर्चा और अंगिरा द्वारा आविष्कृत एवं देवताओं और मनष्यों से प्रयोग की जाने वाली ओषधियाँ उत्पन्न होती हैं।''

इस प्रकार से प्राणविद्या की सार्वभौमिकता स्वतः ही स्पष्ट हो जाती है कि प्राण ही ब्रह्म है। सम्पूर्ण जगत् में जड़ और जङ्गम को संचालित करने वाला प्राण ही है। प्राण के माध्यम से ही मनुष्य मृत्युभय से मुक्त होकर अमरत्व को प्राप्त करते हैं।

प्रथममण्डलम्–तृतीयसूक्तम्

–डॉ० कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सुधी पाठकों की सेवा मे गत माह प्रथममण्डलम्–तृतीयसूक्तम् के दो मन्त्र सुबोध अनुवाद सहित प्रस्तुत किये गये थे। इस माह पञ्च सूक्त के मन्त्र ०३ और ०४ का सुबोध अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं– पाठक ऋग्वेद सुबोध भाष्य के अब तक प्रकाशित समस्त ११५ सूक्तों को निम्न वैबसाइट पर पढ़ सकते हैं। इस वैबसाइट पर महर्षि का सम्पूर्ण भाष्य और इसका संस्कृत व हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनुवाद उपलब्ध है।

Website : https://vedicscriptures.in/ –सम्पादक

ऋषिः– मधुच्छन्दाः वैश्वामित्रःदेवता – इन्द्रःछन्दः– पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्रीस्वरः – षड्जः।

स घा नो योग अ भुवत्स राये स पुरंध्याम्।

गमद्वाजेभिरा स नः।।

स्वर सहित पद पाठ

सः। घ। नः। योगे। आ। भुवत्। सः। राये। सः। पुरम्ऽध्याम्। गमत्। वाजेभिः। आ। सः। नः ।।

विषयः– तावस्मदर्थं किं कुरुत इत्युपदिश्यते।

विषय (भाषा)– वे दोनों, तुम, हम और सब प्राणिलोगों के लिये क्या करते हैं, सो इस मन्त्र में प्रकाश किया है।

सन्धिविच्छेदसहितोऽन्वयः– स हिएव इन्द्रः परमेश्वरः वायुः च नःअस्माकं योगे सहायकारी व्यवहार विद्या उपयोगाय च अभुवत् समन्ताद् भूयात् भवति वा, तथा स एव राये स पुरन्ध्यां च प्रकाशकः भूयात् भवति वा, एवं स एव वाजेभिः सह नः अस्मान् आगमत् आज्ञाप्यात् समन्तात् गमयति वा।।३।।

पदार्थान्वयः(म.द.स.)–{(स)–(हि+एव+ इन्द्रः)} वही परमेश्वर या भौतिक वायु है (च) और (नः) हमारे (योगे) सब सुखों को सिद्ध करने वाले योग, (सहायकारी) सहायक (व्यवहार) व्यवहार, (च)=और (विद्या) विद्या के (उपयोगाय) उपयोग के लिये (आ) हर ओर से प्रकाशित (भवति) होता है। (वा) अथवा (तथा) वैसे ही (स) वह (एव) ही (राये) उत्तम धन के लाभ के लिये (पुरन्ध्याम्) अनेक शास्त्रों की विद्याओं से युक्त बुद्धि का (च) भी (प्रकाशकः) प्रकाशक (भूयात्) हो। (एवम्) ऐसे ही (स) वह (एव) ही (वाजेभिः) उत्तम अन्न और विमान आदि सवारियों के साथ उपस्थित होकर (नः) हमें (समन्तात्) हर ओर से (गमयति) प्राप्त होता है।

भावार्थः(महर्षिकृतः)–अत्र श्लेषालङ्कारः। ईश्वरः पुरुषार्थिनो मनुष्यस्य सहायकारी भवति नेतरस्य, तथा वायुरपि पुरुषार्थेनैव कार्य्यसिद्ध्युपयोगी भवति। नैव कस्यचिद्विना पुरुषार्थेन धनवृद्धिलाभो भवति। नैवैताभ्यां विना कदाचिदुत्तमं सुखं च भवतीत्यतः सर्वैर्मनुष्यैरुद्योगिभिराशीर्मद्भिर्भवितव्यम्।।३।।

महर्षिकृत भावार्थ का भाषानुवाद–इस मन्त्र में भी श्लेषालङ्कार है। ईश्वर पुरुषार्थी मनुष्य का सहायक होता है, अन्य का नहीं। ऐसे ही वायु भी पुरुषार्थ के विना कार्य की सिद्धि में सहायक नहीं होता है। किसी के पुरुषार्थ के विना कभी धन की वृद्धि और लाभ नहीं होता है। इन दोनों के विना उत्तम सुख कभी नहीं होता है, इसलिये सब मनुष्यों को उद्योग और आशीर्वाद के द्वारा ऐसा होना चाहिये।।३।। (ऋग्वेद ०१.०५.०३)

ऋषिः – मधुच्छन्दाः वैश्वामित्रःदेवता – इन्द्रःछन्दः – गायत्रीस्वरः – षड्जः।

यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः।

तस्मा इन्द्राय गायत।।

स्वर सहित पद पाठ

यस्य। सुम्ऽस्थे। न। वृण्वते। हरी इति। सुमत्ऽसु। शत्रवः। तस्मै। इन्द्राय। गायत।।

विषयः– पुनरीश्वरसूर्यौ गातव्यावित्युपदिश्यते।

विषय (भाषा)– ईश्वर ने अपने आप और सूर्य्यलोक का गुणसहित चौथे मन्त्र से प्रकाश किया है।

सन्धिविच्छेदसहितोऽन्वयः–हे मनुष्या! यूयं यस्य हरी संस्थे वर्त्तेते, यस्य सहायेन शत्रवः समत्सु न वृण्वते, सम्यग् बलं न सेवन्ते, तस्मा इन्द्राय तमिन्द्रं नित्यं गायत।।४।।

पदार्थान्वयः(म.द.स.)– हे (मनुष्या) मनुष्यों! (यूयम्) तुम सब (यस्य) जिस परमेश्वर या सूर्य के (हरी) पदार्थों को प्राप्त कराने वाले बल, पराक्रम, प्रकाश और आकर्षण, (यस्य सहायेन) जिसकी सहायता से इस संसार में (वर्त्तेते) वर्तमान हैं, जिसकी सहायता से (शत्रवः) शत्रु जन, (समत्सु) युद्धों में (वृण्वते) अच्छी प्रकार बल (न) नहीं लगाते हैं, (तस्मै) उस (इन्द्राय) परमेश्वर का (नित्य) नित्य (गायत) पूजन करो।

भावार्थः(महर्षिकृतः)–अत्र श्लेषालङ्कारः। न यावन्मनुष्याः परमेश्वरेष्टा बलवन्तश्च भवन्ति, नैव तावद् दुष्टानां शत्रूणां नैर्बल्यङ्कर्तुं शक्तिर्जायत इति।।४।।

महर्षिकृत भावार्थ का भाषानुवाद– इस मन्त्र में श्लेषालङ्कार है। जब तक मनुष्य लोग परमेश्वर को अपने इष्ट देव समझनेवाले और बलवान् अर्थात् पुरुषार्थी नहीं होते, तब तक उनको दुष्ट शत्रुओं की निर्बलता करने को सामर्थ्य भी नहीं होता।।४।।

(ऋग्वेद ०१.०५.०४)

वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुलम्, में प्रवेश सूचना

आपको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि हमारे गुरुकुल को उत्तराखण्ड संस्कृत शिक्षा परिषद् से 27 मार्च 2025 को मान्यता प्राप्त हो गयी है। गुरुकुल की कक्षाओं के लिए भवन भी तैयार हो गये हैं एवं सुयोग्य तथा अनुभवी आचार्यों की नियुक्ति भी कर ली गयी है। गुरुकुल में पाँचवी कक्षा उत्तीर्ण (बालक) छात्रों को कक्षा छठी में प्रवेश दिया जायेगा। गुरुकुल में कक्षा छह में कुछ छात्रों का प्रवेश भी हो गया है। सभी अभिभावकों से अनुरोध है कि यदि आप अपने बच्चे को मातृ भक्त, पितृ भक्त, ऋषि भक्त, गुरु भक्त, भारतीय संस्कृति का पोषक तथा देशभक्त चरित्रवान, सदाचारी बनाना चाहते हैं तो ''उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनाम्...'' वेद के इस सन्देश के अनुरूप पर्वतों की कन्दराओं और नदी के तट पर स्थित शुद्ध, शान्त, पवित्र वातावरण में स्थित उक्त गुरुकुल में प्रविष्ट करायें। छात्रों के प्रवेश के लिए अधोलिखित मोबाईल नम्बर पर सम्पर्क करें ताकि 7 अप्रैल 2025 से प्रारम्भ हुए सत्र में आपके बच्चे का नाम रजिस्टर किया जा सके।

मन्त्री
प्रेम प्रकाश शर्मा
मो० 9412051586

प्रधानाचार्य
आचार्य रवीन्द्र कुमार आर्य
मो० 9412659002

कौन चैन की नींद नहीं सो सकते और उसके उपाय

–आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार

इस विषय में हम विदुर जी के अनुसार प्रजागर–उन्निद्रता–नींद न आने के कारण से पीड़ित जो लोग हैं, उन पर विचार करते हुए यथाशक्ति उपाय सुझाने का भी प्रयास करेंगे जिससे कि ऐसे लोग चैन की नींद सो सकें। विदुर जी ने यद्यपि यहाँ उन्निद्रता से पीड़ित सभी प्रकार के लोगों को नहीं गिनाया है पर तब भी प्रसंग के अनुकूल जो आवश्यक समझा उसकी चर्चा कर दी है। उन्निद्रता के ६ कारण बताए गए हैं, यहाँ दूसरे कारण दुर्बलता पर विचार किया जा रहा है–

२–दुर्बलम्

जो मनुष्य शरोर से दुर्बल न हो, कमजोर हो, खाया पिया जिसे पचता न हो, पेट जिसका सदा खराब रहता हो, जिसको प्रायः अजीर्ण रहता हो या जिसका वायु प्रधान शरीर रहता हो, जिसके पेट में दर्द रहता हो आदि–आदि तो ऐसे दुर्बल व्यक्ति को जैसे अन्य अनेक व्याधियाँ आ घेरती हैं, वैसे हो उस को यह उनिद्रता भी आ घेरती है। ऐसो अवस्था में सुख की नीद न सो सकने के कारण वह और भी क्षीण– कमजोर होता चला जाता है। इसलिये ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि वह औषधोपचार से, दवा और परहेज से, भ्रमण और व्यायाम से, अनुकूल भोजन–आच्छादन से, स्वाध्याय और सत्संग से अनुकूल चिन्तन और मनन से, तथा ऋत, मित और हितकर, खाद्य एवं पेय पदार्थों के सेवन आदि से अपने को सभी दृष्टि से नीरोग–स्वस्थ और सबल बनाने का हार्दिक प्रयत्न करे ताकि उनिद्रता–उनीन्देपन के रोग से वह मुक्त होकर सुख से सो सके ।

जो व्यक्ति यथोचित साधनों से हीन हो उसे भी प्रजागर– उनिद्रता आ घेरती है। जैसे शीत का निवारण करने के लिये अनुकूल वस्त्र, कम्बल और रजाई आदि का न होना, बुभुक्षा–भूख के निवारण के लिये अन्न आदि खाद्य पदार्थों का न होना, सन्तान के पालन–पोषण के लिये धन, अन्न, वस्त्र आदि का अभाव, शिक्षा, दीक्षा और स्वास्थ्य आदि के लिये नानाविध साधनों का अभाव, यदि कोई रुग्ण हो गया हो तो उसके ओषधोपचार दवा और परहेज के लिये धन का अभाव, यदि कोई पुत्र युवावस्था को प्राप्त हो, तो उसके विवाह आदि के लिये युग के अनुरूप समुचित धन आदि साधनों का अभाव इत्यादि भी मनुष्य को चिन्ताओं में डाल कर उनिद्रता का शिकार बना देता है ।

ऐसी परिस्थिति में निरन्तर चिन्ता में मग्न रहकर सुख–चैन को समाप्त कर करवटें बदलते हुए अपने स्वास्थ्य को नष्ट करने की अपेक्षा अच्छा यही होगा कि वह व्यक्ति अपनी बुद्धि से कार्य लेकर पुरुषार्थ करके धन आदि साधनों का उपार्जन करे। फिर उस उपार्जित किये हुए धन अदि साधनों से जो कुछ भी सम्भव हो सके उसकी बुद्धिपूर्वक सम्यक् व्यवस्था करे तथा उसी में ही सन्तोष का अनुभव करके प्रभु का हृदय से धन्यवाद करे।

कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि मनुष्य वास्तव में तो यथोचित साधनों से हीन नहीं होता, परन्तु वह फिर भी अपने समीपवर्ती लोगों को नाना प्रकार के ठाठबाठ के साधनों या सुख–सुविधाओं से सम्पन्न देख कर अपने आप को उन साधनों से और सुख–सुविधाओं से हीन अनुभव करता रहता है। जैसे कोई सोचता है कि अमुक की अपनी कोठी है, उसमें एयर कण्डीशण्ड कमरे हैं, उसके पास कार है, टेलीविजन है, वीडियो है, रेडियो है, ट्रांजिस्टर है, टेपरिकार्ड है, फ्रिज है, कपड़े धोने की मशीन है, सिलाई की मशीन है, मिक्सी है, इत्यादि– इत्यादि। अब चूँकि इन साधनों के अभाव में यह समाज में अपने आप को हीन अनुभव करता है तो उसे, ''कैसे इन सब सुख–सुविधाओं की पूर्ति हो, यह चिन्ता होने लगती है। इस चिन्ता के परिणाम स्वरूप उसकी शान्ति और चैन समाप्त हो जाता है। तब उस

बेचैनी में उसकी नींद विदा हो जाती है और वह अशान्त मन हुआ-हुआ रात भर करवटें बदलता रहता है और अगर कहीं थोड़ी बहुत नींद थकान के कारण आ भी गई तो उसे वह अपना बड़ा सौभाग्य समझता है। परन्तु जागने पर उसके मन की स्थिति फिर वैसी ही हो जाती है जैसी कि पहले होती है।

उपर्युक्त प्रवृत्ति यदि और अधिक बढ़ जाती है तो वह व्यक्ति दूसरों के सुख-सौभाग्यों को देख-देख कर या सुन-सुन कर अपने भाग्य को कोसता रहता है, अपने माता-पिता और कुल को एवं बन्धु-बान्धवों की कोसता रहता है, भगवान् को कोसता रहता है, समाज एवं राज्य व्यवस्था को कोसता रहता है। यदि यह प्रवृत्ति इससे भी आगे बढ़ती है तो उन धन, अन्न आदि विशिष्ट साधनों से सम्पन्न लोगों से स्पष्ट रूप से वह ईर्ष्या-द्वेष आदि करना आरम्भ कर देता है। इस प्रकार उस का स्वभाव और व्यवहार पूरी तरह बिगड़ जाता है। ईर्ष्या आदि के कारण उस में इतना धैर्य तो रहता नहीं कि वह भी दूसरे मनुष्यों के समान पूर्ण मनोयोग से पुरुषार्थ करके धन कमाये और उन सुख-सुविधाओं को प्राप्त करे या जो प्राप्त है उस पर सन्तोष करे। अब शीघ्रता से वह सब कुछ प्राप्त तो हो नहीं पाता। तब वह निराश होकर या तो अपने को हानि पहुँचा लेता है अथवा अन्यों को सुख-सुविधाओं में, सुख-सौभाग्यों में विघ्न उचित करता है या उनके उन सुख-सुविधाओं के स्रोतों को समाप्त करने में ही सुख अनुभव करता है। पर यह तो सुख कहाँ, सुख का आभास मात्र होता है। भला दूसरों को हानि पहुंचाकर भी वभी कोई सुखी हो सकता है? कदापि नहीं। इससे तो मनुष्य की उल्टी और अधिक दुर्गति होती है। इसलिये ऐसी परिस्थिति में मनुस्य को चाहिए कि वह विचार करे कि ष्मेरी तरह इस संसार में करोड़ों ऐसे व्यक्ति हैं जिनके पास दो समय का भोजन तथा तन ढकने के लिये यथोचित वस्त्र भी नहीं हैं, तब भी वे संसार में जी रहे हैं, हंस रहे हैं, गा रहे हैं, नाच रहे हैं और रात को निश्चिन्त होकर सुख से सो रहे हैं।'' यह सब देख, सुन और विचार कर अपने जीवन और साधनों पर मनुष्य को सन्तोष करना चाहिये तथा साथ में उस प्रभु का इसके लिये सतत् धन्यवाद करते रहना चाहिये जिसने की कृपा करके अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार यह सब कुछ उसे प्रदान किया हुआ है। यदि इस में भी सन्तोष न हो तो बजाय इस के कि मनुष्य बेचौन होकर अपनी नींद हराम करे, अच्छा यह है कि वह शक्ति भर पुरुषार्थ कर अर्थ का उपार्जन करे और फिर जो-जो उस उपार्जित धन से सम्भव हो सके, क्रय करके खरीद कर के उसी में ही सन्तोष अनुभव करना आदि भी उस उन्निद्रता के निवारण का एक सुन्दर उपाय है ।

शेष अगले अंक में जारी.....

प्रस्तुतकर्त्ताः डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

सर्व श्री दीप चन्द विजय कुमार,
कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.) मो. 9837444469
दीप कोल्ड स्टोर,
कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.) मो. 9457438575
दीप मार्बल्स,
कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.) मो. 9412468691

सिन्दूर का रंग

–डॉ. वेदपाल, सम्पादक पाक्षिक परोपकारी, अजमेर

किसी भी सभ्यता/संस्कृति में कुछ परम्पराएँ इस प्रकार की होती हैं, जिन्हें व्यक्त करने के लिए कुछ प्रतीक प्रयुक्त किए जाते हैं। भारतीय हिन्दू धर्म–संस्कृति में अनेक प्रतीक उपलब्ध हैं। गृहस्थ में प्रवेश करने के पश्चात् मातृशक्ति–महिला अपनी माँग निकाल कर उसमें सिन्दूर लगाती हैं। यह सिन्दूर केवल एक रंगयुक्त पदार्थ मात्र नहीं है, अपितु उसके जीवन के सौभाग्य का प्रतीक है। जो प्रतीक–प्रत्यायनी के भेद को शब्दों द्वारा अभिव्यक्त नहीं कर सकते वह भी जानते हैं कि यह ऐसा महत्वपूर्ण प्रतीक (चिन्ह) है, जिसे देखने मात्र से सामने वाला यह जान लेता है कि यह महिला विवाहिता तथा सौभाग्युक्ता (जीवित भर्तृका) है।

22 अप्रैल को पहलगाम की बैसरन घाटी में आतंकवादियों ने धर्म की पहचान कर 27 निर्दोष पर्यटकों की हत्या कर दी थी। इन पर्यटकों में वह महिलाएँ भी थीं, जिनकी माँग में सिन्दूर कुछ दिन अथवा कुछ मास पूर्व ही भरा गया था। इनके सामने इनके पति को गोली मारी गई। इससे इनकी माँग का सिन्दूर मिटा, क्योंकि वह सधवा से विधवा हो गईं थी। इस घटना की तीव्र प्रतिक्रिया होनी स्वाभाविक ही थी। भारत सरकार और भारतीय सेना के साथ सभी देशवासियों ने इसे घृणित कृत्य माना।

आतंकवादियों को यथोचित दण्ड देने के लिए इस घटना के 15वें दिन 7 मई के प्रातः 2 बजे के आसपास पाकिस्तान तथा पाक अधिकृत कश्मीर स्थित 9 आतंकी ठिकाने भारतीय थल व वायुसेना के संयुक्त प्रहार से ध्वस्त कर दिए गए। इनमें से 5 पी.ओ.के. तथा चार पाकिस्तान में स्थित थे। इस सैनिक कार्यवाही को 'ऑपरेशन सिन्दूर' नाम दिया गया। यह नाम भी प्रतीकात्मक ही था। इससे पूर्व सरकार ने पाकिस्तान के साथ हुए सन् 1960 के सिन्धुजल समझौते को स्थगित कर दिया था।

पाकिस्तान अपने स्वभाव के अनुसार निरन्तर भारत को उकसाने की कार्यवाही करता रहा। आतंकवादियों के जनाजे में पाक सेना के अधिकारी वर्दी पहने हुए उन्हें श्रद्धांजलि देते सारी दुनिया ने देखे। परमाणु शक्ति होने की धौंस निरन्तर दी जाती रही। भारतीय क्षेत्र के जम्मू, पुंछ, राजौरी तथा पंजाब, राजस्थान के नागरिक क्षेत्रों के साथ धार्मिक स्थलों को भी निशाना बनाया। जबकि भारत ने केवल आतंकवादियों के ठिकाने ही ध्वस्त किए थे। किसी भी सैन्य तथा नागरिक क्षेत्र को भारत ने किसी भी प्रकार की क्षति नहीं पहुंचाई थी।

पाकिस्तान ने भारत की ओर से की गई सीमित कारवाई के बावजूद भी युद्धक विमान एफ–16 तथा जे.एफ.–17 से भी आक्रमण का प्रयास किया, किन्तु भारतीय आकाश मिसाइल ने इन्हें आकाश में ही नष्ट कर दिया। पाक के अधिकांश ड्रोन भी आकाश में ही निष्क्रिय कर दिए गए। पाकिस्तान ने इस विफलता से कोई सबक न लेते हुए भारत पर अपनी फतह मिसाइल से निशाना लगाया, किन्तु वह भी

सिरसा के पास नष्ट कर दी गई। पाकिस्तान को आतंक को समर्थन देने के लिए प्रायश्चित करना चाहिए था, किन्तु फतह दागकर उसने भारत को विवश कर दिया।

भारत द्वारा अपनी सैन्य क्षमता का प्रदर्शन करते हुए पाकिस्तान के एयर डिफेन्स सिस्टम को ध्वस्त कर लाहौर, रावलपिण्डी, इस्लामाबाद, करांची जैसे नौ महत्वपूर्ण शहरों पर आक्रमण कर उसके एयरबेस तथा उनकी हवाई पट्टियों को क्षतिग्रस्त कर दिया गया।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण था– ब्रह्मोस मिसाइल द्वारा किराना हिल्स के पास सटीक निशाना लगाना। इससे पाकिस्तान के परमाणु बम के संग्रह केन्द्र को भारत की मारक सीमा में होने की पुष्टि हुई। भारत के सभी प्रहार अपने वायुक्षेत्र से किए गए थे।

ब्रह्मोस के एक ही सटीक निशाने ने पाकिस्तान की सारी अकड़ ढीली कर दी और दो घण्टे के अन्दर अमेरिका से युद्ध बन्द कराने की गुहार लगाने के साथ ही भारत के डी.जी.एम.ओ. से हॉटलाइन पर युद्धबन्दी की अपील करने लगा।

पाकिस्तान की ओर से युद्ध विराम तथा भारत की ओर से स्थगन की घोषणा के साथ युद्ध तो स्थगित है, किन्तु पाकिस्तान की विश्वसनीयता शून्य होने के कारण भारत के प्रधानमन्त्री का राष्ट्र को सम्बोधन करने के समय दिया गया वक्तव्य महत्वपूर्ण है–

1– आतंक और वार्ता साथ–साथ नहीं चल सकते।

2– आतंक और व्यापार साथ–साथ नहीं चल सकते।

3– सिन्धु नदी का जल (पाकिस्तान की 80 प्रतिशत कृषि की सिंचाई करता रहा है।) और रक्त भी साथ–साथ नहीं बह सकते।

यह मात्र स्थगन है, पाक की कार्यशैली को देखने के लिए। आतंक को समर्थन / प्रश्रय देने पर भारत एकतरफा कार्रवाई करेगा।

युद्धबन्दी के समर्थक भारत के प्रति सहृदय न होकर अपने अस्त्र–शस्त्रों की विफलता तथा वैश्विक स्तर पर उनकी बिक्री घटने के भय से व्याकुल थे।

इस सीमित युद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत महत्वपूर्ण शक्ति है, उसे किसी भी प्रकार भयभीत नहीं किया जा सकता।

आधुनिक तकनीकि के सिरमौर माने जाने वाले किसी भी प्रकार के युद्धक उपकरण पूर्णतः भारतीय उपकरणों के सामने विफल हुए हैं। इसरो तथा डी.आर.डी.ओ. की स्वदेशी तकनीकी का सिक्का इतना प्रभावी हुआ कि मात्र 4–5 दिनों में सत्रह देश ब्रह्मोस मिसाइल खरीदने के इच्छुक हो गये हैं।

इस सीमित ऑपरेशन सिन्दूर ने जहाँ सिन्दूर की महत्ता को प्रकट किया, वहीं उसकी रक्षा के लिए युद्ध भी करना हो तो भारत उससे पीछे हटने वाला नहीं, यह भी स्पष्ट कर दिया है। इसी का परिणाम है कि 20 दिन से एक बी.एस.एफ. जवान पूर्णम शॉ को अपनी कैद में रखनेवाला पाकिस्तान बिना किसी शर्त के छोड़ने पर विवश हुआ। 14 मई को पाक रेंजर्स ने बाघा बार्डर पर उसे बी.एस.एफ. को सौंप दिया। यह सिन्दूर का ही रंग है।

इसी का एक दुष्परिणाम पाकिस्तान पर आने वाले समय में घनीभूत होता दिखाई देगा और वह है किराना हिल्स से परमाणु विकरण

के लीक होने की सूचनाएँ। समाचारों के अनुसार निकटवर्ती क्षेत्र तो खाली कराए ही जा रहे हैं, अमेरिका और मिस्र के जांच अधिकारियों का वहाँ जाकर जाँच करना साधारण बात नहीं है। अमेरिका पाकिस्तान के परमाणु भण्डारण आदि पर किसी न किसी बहाने नियन्त्रण का प्रयास करता हुआ दिखाई दे तो कुछ भी आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

भूकम्प के समय सर्वाधिक सहायता देने वाले भारत के साथ तुर्की का व्यवहार विस्मित करने वाला नहीं मानना चाहिए। उसके ड्रोन लक्ष्य से पूर्व आकाश में निष्क्रिय कर दिए गए। तुर्की इसके परिणाम को आसानी से भुला नहीं पाएगा। साथ ही व्यापार और पर्यटन के क्षेत्र में होने वाली आर्थिक हानि भी तुर्की को सिन्दूर का रंग दिखा ही देगा–ऐसा दो–तीन दिन की गतिविधियों से सूचित हो रहा है।

आने वाले समय में यदि पाकिस्तान ने आतंकवादियों के समर्थन से तौबा न की तो उसे सिन्दूर का और भी गाढ़ा रंग देखने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि यह नया भारत विरोध पत्र भेजकर इतिश्री करने वाला नहीं, अपितु पेंटागन के विश्लेषकों के अनुसार बंकर के अन्दर भी सटीक निशाना लगाने के सामर्थ्य से युक्त है। पश्चिम के कुछ प्रमुख विशेषज्ञों के मत में भारत ने जिम्मेदार देश की भूमिका का निर्वाह करते हुए भी किराना हिल्स के परमाणु भण्डारण वाले बंकर के मुख पर सटीक निशाना लगाकर भारत ने अपने सामर्थ्य की अघोषित घोषणा कर दी है।

(परोपकारी पत्रिका, अजमेर से साभार)
–प्रस्तुतकर्त्ताः
मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त.........

वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुलम् नालापानी, देहरादून

कक्षा 6 के लिए प्रवेश प्रारम्भ

कक्षा 6 के लिए विषय– संस्कृत व्याकरण, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, समाज शास्त्र, इतिहास, चित्रकला, कम्प्यूटर आदि।

हमारा उद्देश्यः– शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं सर्वांगीण विकास हेतु उत्तम शिक्षा

हमारी विशेषताएँ:–

1. शान्त, स्वच्छ वातावरण एवं द्रोणनगरी में शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर।
2. उत्तम शिक्षा के साथ भारतवर्ष के प्रतिष्ठित विद्वानों का सान्निध्य।
3. खेलकूद के साथ–साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर।
4. मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संचालित प्रतिस्पर्धाओं (competition) में प्रतिभाग करने की समुचित व्यवस्था।

मन्त्री
प्रेम प्रकाश शर्मा
मो० 9412051586

प्रधानाचार्य
आचार्य रवीन्द्र कुमार आर्य
मो० 9412659002

विश्व समुदाय द्वारा वेदों की उपेक्षा दुर्भाग्यपूर्ण है

–मनमोहन कुमार आर्य

वेद ईश्वर प्रदत्त सब सत्य विद्याओं का ज्ञान है जो सृष्टि की आदि में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को प्राप्त हुआ था। इस सृष्टि को सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा सच्चिदानन्दस्वरूप आदि लक्षणों वाले परमात्मा ने ही बनाया है। उसी परमात्मा ने सभी वनस्पतियों व ओषधियों सहित मनुष्य आदि समस्त प्राणियों को भी उत्पन्न किया है। मनुष्यों के शरीर व उनके मन व बुद्धि आदि को भी परमात्मा ही बनाता है। अतः बुद्धि के विषय ज्ञान को भी परमात्मा ही प्रदान करता है। यदि सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा वेदों का ज्ञान न देता तो संसार में ज्ञान का प्रकाश न होता। मनुष्यों में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह परमात्मा से वेदों का ज्ञान प्राप्त किये बिना स्वयं किसी भाषा व ज्ञान का विस्तार कर सकें। ईश्वर न हो तो यह सृष्टि भी बन नहीं सकती थी और न ही इसमें मनुष्य आदि प्राणी जन्म ले सकते थे। अतः सभी मनुष्यों को इस सत्य रहस्य को समझना चाहिये और वेदों की उपेक्षा न कर वेदों का अध्ययन कर इसमें उपलब्ध ज्ञान को प्राप्त होकर इसका लाभ उठाना चाहिये।

महर्षि दयानन्द ने अपने समय में अपनी कुछ शंकाओं का उत्तर संसार के किसी मत, पन्थ व ग्रन्थ में न मिलने के कारण ही सत्य ज्ञान की खोज की थी। उन्हें यह ज्ञान चार वेदों एवं वैदिक साहित्य, जो ऋषियों द्वारा रचित है, उनमें प्राप्त हुआ था। आज भी वेद ही सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ होने के शीर्ष व उच्च आसन पर विराजमान हैं। वेदों का अध्ययन कर ही मनुष्य ईश्वर, आत्मा तथा प्रकृति सहित अपने कर्तव्य और अकर्तव्यों का बोध प्राप्त करता है। वह वेद ज्ञान को आचरण में लाकर ही दुःखों से मुक्त होकर आत्मा की उन्नति कर सुखों को प्राप्त होकर मृत्यु के बाद सब दुःखों व क्लेशों से रहित मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। वेद प्रतिपादित ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करते हुए जीवन जीनें से ही मनुष्य को ईश्वर का साक्षात्कार होकर धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष सिद्ध होते हैं। यही मनुष्य की आत्मा के प्राप्तव्य लक्ष्य हैं।

पाँच हजार वर्षों से कुछ अधिक वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के बाद देश देशान्तर में अव्यवस्था फैल गई थी जिसके कारण वेदों के सिद्धान्तों की सत्य शिक्षा व उनके प्रचार का प्रायः लोप हो गया है। जिस प्रकार सूर्य के अस्त होने पर अन्धकार होकर रात्रि हो जाती है इसी प्रकार वेदों की सत्य शिक्षाओं का लोप हो जाने के कारण सत्य ज्ञान का भी लोप होकर अज्ञान रूपी रात्रि का प्रादुर्भाव हुआ था जिसने अज्ञान, अन्धविश्वासों, मिथ्या सामाजिक परम्पराओं तथा अविद्या को जन्म दिया। आज भी अधिकांश रूप में यही स्थिति देश देशान्तर में जारी है। देश देशान्तर में वेदों की शिक्षाओं से रहित मत–मतान्तर प्रचलित हैं जिनसे ईश्वर के सत्यस्वरूप सहित सत्य विद्याओं का ज्ञान नहीं होता। किसी को न तो ईश्वर का साक्षात्कार ही होता है और न ही अकर्तव्यों का ज्ञान होता है जिस कारण से संसार में अकर्तव्यों को करने से अशान्ति व दुःखों का विस्तार हो रहा है। वैदिक धर्म प्राणियों पर दया, अहिंसा तथा करूणा पर आधारित है। इसका वर्तमान संसार में लोप ही प्रतीत होता है।

इस कारण भी संसार में अनेक प्रकार से हिंसा का वातावरण देखा जाता है। लोग सत्य धर्म का पालन न कर अपने प्रयोजन की सिद्धि में हठ, दुराग्रह एवं अविद्यादि का प्रयोग करते हैं जिससे मनुष्यों का जीवन दुःख व चिन्ताओं से युक्त होता है। इनका एक ही उपाय है कि वह महर्षि दयानन्द के विचारों का मनन करें और उनकी ग्राह्य शिक्षाओं को अपनायें जिससे मानव जाति का समुचित उत्थान होकर सभी मनुष्य जीवन के लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति में अग्रसर होकर उसे प्राप्त हो सकें।

ऋषि दयानन्द ने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ के प्रथम दस अध्यायों में वेदों की मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रकाश व मण्डन किया गया है। सभी मतों के लोग इसे पढ़कर इसकी सत्यता की परीक्षा करते हुए इसके लाभ व हानि पर विचार कर सकते हैं। इस ग्रन्थ के उत्तरार्ध में संसार में प्रचलित प्रायः सभी मतों के सत्यासत्य की परीक्षा की गई है। इसे भी सभी लोग पढ़कर व विचार कर सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग करते हुए संसार को सुख व शान्ति को प्राप्त कराने की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं। यही ऋषि दयानन्द का भी उद्देश्य विदित होता है। वर्तमान में कोई भी मत व सम्प्रदाय इस आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर रहा है। ऐसा देखने में आता है कोई भी मत दूसरे मतों की अच्छी बातों का भी न तो ग्रहण करता है और न ही अपनी अतार्किक व अहितकर बातों का विचार कर उनका त्याग करने का प्रयत्न करता है। इस दृष्टि से मनुष्य परमात्मा प्रदत्त अपने मन, बुद्धि व आत्मा का सदुपयोग न कर उसके कुछ विपरीत आचरण करता हुआ दिखाई देता है। शतप्रतिशत लोग ऐसा नहीं करते परन्तु अधिकांश लोग ऐसा करते हुए दिखते हैं।

सभी मतों के लोग अपने आचार्यों की शिक्षाओं पर निर्भर रहते हैं। वह सत्य व असत्य का विचार प्रायः नहीं करते। वह अपने आचार्यों की प्रत्येक बात का विश्वास करते हैं। आचार्यगण अपने हित व अहित के कारण ही बातों को देखते व अपनाते हैं। इस कारण सत्य ज्ञान से युक्त ईश्वरीय ज्ञान वेदों के साथ न्याय नहीं हो पा रहा है। विचार करने पर इसका एक कारण यह भी लगता है कि आर्यसमाज को जिस प्रकार जन जन तक वेदों का ज्ञान पहुँचाना था, उसमें भी वह सफल नहीं हुआ। वर्तमान में आर्यसमाज द्वारा किया जाने वाला वेदों का प्रचार आर्यसमाज मन्दिरों में अपने कुछ नाम मात्र के सदस्यों के मध्य सिमट कर रह गया है। हमारे विद्वान व प्रचारक आर्यसमाज मन्दिर के साप्ताहिक सत्संगों व उत्सवों में जाकर प्रवचन व भजनों आदि के द्वारा प्रचार करते हैं। जन–जन तक हमारी बातें पहुँचती ही नहीं है जबकि अन्य मतों के लोग अपने अनुयायियों द्वारा जन–जन तक पहुँचने की हर प्रकार से चेष्टायें करते हैं और उन्हें येन केन प्रकारेण अपने मत में मिलाने का प्रयत्न करते हैं। कुछ मतों की संख्या वृद्धि व आर्यों व हिन्दुओं की संख्या में कमी को भी इस सन्दर्भ में देखा व समझा जा सकता है। आर्यसमाज के सुधी विद्वानों व शुभचिन्तकों को मत–मतान्तरों के प्रचार से प्रेरणा लेकर स्वयं भी वेदों का जन–जन में प्रचार करने की योजना बनानी चाहिये। यदि ऐसा न हुआ तो आने वाले समय में देश व आर्य हिन्दू जाति के लिये इस उपेक्षा के परिणाम गम्भीर व हानिकारक हो सकते हैं। निष्पक्ष सुधी मनुष्यों व मानव हितैषी सामाजिक संगठनों का कर्तव्य होता है कि अपने कर्मों पर विचार करें और उन्हें प्रभावशाली बनायें जिससे अभीष्ट लाभों की प्राप्ति हो सके। इसके लिये हमें सुसंगठित होना होगा और योग्य व निष्पक्ष

अधिकारियों को अधिकार प्रदान कराने होंगे, तभी हम अभीष्ट मार्ग का अनुगमन कर अपने उद्देश्य में सफल हो सकते हैं।

ईश्वर की व्यवस्था पर विचार करते हैं तो वह हमें सत्कर्मों का प्रेरक और कर्मानुसार जीवों को सुख व दुःख देने वाला विधाता सिद्ध होता है। वेद परमात्मा का विधान है जिसमें मनुष्य के कर्तव्यों व अकर्तव्यों का ज्ञान कराया गया है। जो मनुष्य वेदाध्ययन नहीं करता उसे अपने कर्तव्यों व अकर्तव्यों का ज्ञान भी नहीं होता। ऐसी स्थिति में मनुष्य से अवैदिक कर्मों का हो जाना सम्भव होता है जिसका परिणाम ईश्वरीय दण्ड विधान के अनुसार दुःख होता है। इस कारण बुद्धि व वाणी प्राप्त सभी मनुष्यों का कर्तव्य हैं कि ऋषि के बनाये हुए वेदानुकूल सत्य ग्रन्थों वा शास्त्रों का अध्ययन करें और उनकी सत्य शिक्षाओं का आचरण, पालन व प्रचार करें। यदि हमने अपना कोई भी कर्म ईश्वर की आज्ञा के विपरीत किया तो हम दण्ड व दुःख के भागी अवश्य होंगे। एक स्कूल के अध्यापक का व परीक्षक का उदाहरण भी लिया जा सकता है। सब बच्चे स्कूल में प्रवेश लेने व अध्ययन करने में स्वतन्त्र होते हैं। जो स्कूल में प्रवेश लेकर परिश्रमपूर्वक अध्ययन करते हैं उनको ही ज्ञान की प्राप्ति होते है। परीक्षा में उन्हें पूछे गये प्रश्नों के उत्तर अपने ज्ञान के अनुसार लिखने व देने की स्वतन्त्रता होती है। जो छात्र प्रश्नों के ठीक उत्तर देगा वह उत्तीर्ण होता है तथा जो नहीं देता वह फेल हो जाता है। परीक्षा के समय परीक्षक व अध्यापक अपने विद्यार्थियों को सही व गलत का ज्ञान नहीं कराते। एक अध्यापक अपने ही शिष्य को जो परीक्षा में प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं देते, उन्हें फेल कर देता है। कुछ अनुतीर्ण विद्यार्थियों को स्कूल की प्रतिश्ठा को देखते हुए प्रवेश भी नहीं दिया जाता। ऐसा न्याय का पालन करने वाले अध्यापक व शिक्षक करते हैं। ईश्वर का विधान भी तर्क एवं युक्तियों पर आधारित है। परमात्मा भी अपने ज्ञान वेद का अध्ययन न करने वाले तथा उसके अनुसार आचरण न करने वाले लोगों को उनकी योग्यता व अयोग्यता के अनुसार उत्तीर्ण व अनुत्तीर्ण तथा सुख व दुःख रूपी पुरस्कार व दण्ड देता है। हमें व संसार के सब लोगों को इस उदाहरण में निहित शिक्षा को जानकर उसके अनुसार व्यवहार करना चाहिये।

वेदों के अध्ययन व अध्यापन के मनुष्य जाति के लिए अनेक लाभ हैं। संसार में एक ही परमात्मा है जो सृष्टिकर्ता, मनुष्यादि प्राणियों को जन्म व सुख आदि देने वाला तथा सभी स्त्री व पुरुषों के कर्मों का न्याय करने वाला है। वेद ही ईश्वर का ज्ञान है इस कारण वेद ही सत्य व असत्य का निर्णय करने में परम प्रमाण हैं। इस कारण सभी मनुष्यों को अपने अपने विचारों को वेदानुकूल बनाकर सत्याचरण का पालन करते हुए ही अपने जीवन को उन्नति व सुख के पथ पर अग्रसर करना चाहिये। यदि ऐसा करेंगे तो सब मनुष्यों का वर्तमान जन्म सुखों से युक्त होने के साथ परजन्म में भी सुखी व उन्नति को प्राप्त होगा। यदि इसका पालन न कर मत–मतानतरों की वेदविरुद्ध शिक्षाओं में लगे रहेंगे तो हमारा परजन्म उन्नति के स्थान पर एक फेल विद्यार्थी के समान दुःखों से पूरित हो सकता है जैसा कि स्कूली शिक्षा में ठीक से अध्ययन न करने तथा प्रश्नों के सही उत्तर न देने वालों के साथ होता है। परीक्षा में असफल ऐसे विद्यार्थियों का भविष्य सुखमय न होकर दुःखमय ही होता है। हमें वेदों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। वेदों के सत्य एवं उपयोगी अर्थों को जानकर उनसे लाभ उठाना चाहिये और विश्व में एक सत्य मत की स्थापना में सहयोग देना चाहिये जिससे विश्व में शान्ति, स्वर्ग व रामराज्य जैसा वातावरण हो।

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम तपोवन का ग्रीष्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

"ईश्वर की उपासना वा ध्यान करने से ज्ञान की प्राप्ति होने सहित आत्मा की उन्नति भी होती हैः पं. नरेशदत्त आर्य"

–मनमोहन कुमार आर्य

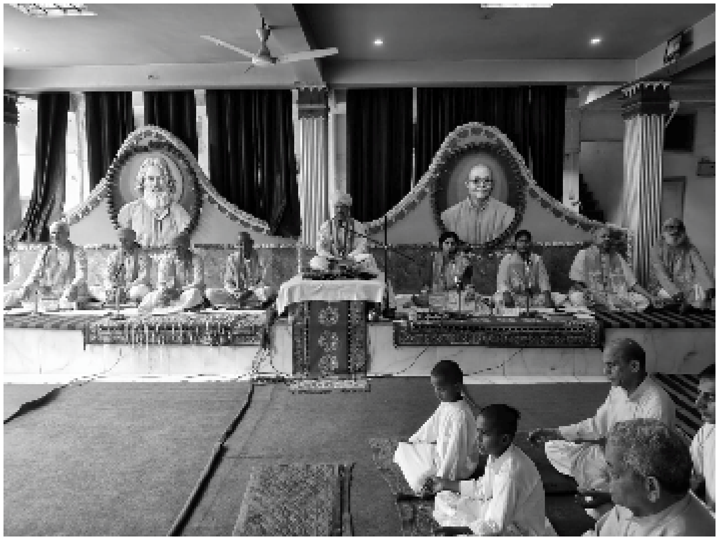

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का ग्रीष्मोत्सव श्रद्धा के वातावरण में आरम्भ हुआ। प्रातः 7.00 बजे से चार यज्ञ–वेदियों पर यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान् श्री रवीन्द्र कुमार शास्त्री जी थे। यज्ञ में मन्त्रोच्चार कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद की स्नातिका आचार्या भावना जी एवं उनकी एक सहयोगी छात्रा ने किया। ब्रह्मा जी के साथ मंच पर आगरा से पधारे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी, पं. नरेश दत्त आर्य जी, पं. नरेन्द्र दत्त आर्य एवं श्री रमेश चन्द स्नेही आदि थे। लगभग डेढ़ घंटे तक यज्ञ हुआ जिसमें चारों वेदियों पर उपस्थित 30 से अधिक यजमानों ने घृत एवं साकल्य की आहुतियाँ यज्ञाग्नि में प्रदान कीं। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रवीन्द्र कुमार शास्त्री जी ने यज्ञ में बोले गये मन्त्रों में कुछ मन्त्रों के तात्पर्य भी श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत किये।

यज्ञ के ब्रह्मा पं. रवीन्द्र कुमार शास्त्री जी ने कहा कि सुक्रतो उस मनुष्य को कहते हैं जो यज्ञ आदि श्रेष्ठ कर्मों को करता है। शास्त्री जी ने कहा कि विद्या आदि शुभ गुणों का धारण एवं परोपकार से युक्त आचरण ही प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिये। उन्होंने कहा कि बेटियों को जो धन दिया जाता है वह उन्हें अवश्य दिया जाना चाहिये। ऐसा करना धन का सदुपयोग करना है। उन्होंने अपने जीवन में घटे ऐसे उदाहरण भी सुनाये जब एक पिता ने अपनी सारी सम्पत्ति अपने पुत्र को वसीयत कर दी तो उस पुत्र ने अपनी बहिन को अपने हिस्से में से पाँच बीघा भूमि अपनी बहिन को देने की घोषणा अपने पिता की श्रद्धांजलि सभा में की। आचार्य

जी ने उस भाई की अपनी बहिन के प्रति इस प्रकार की सद्भावना की प्रशंसा की और कहा कि हमें भी इस उदाहरण से प्रेरणा लेनी चाहिये। आचार्य रवीन्द्र शास्त्री जी ने कहा कि हम जीवन में जितने अधिक शुभ कर्म करते हैं उतना ही हम अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं और सफलताओं को प्राप्त करते हैं। आचार्य जी ने कहा कि हमें समाज को अपना परिवार समझना चाहिये और समाज के प्रति इस परिवार की भावना से ही सबके प्रति समान व अच्छा व्यवहार करना चाहिये।

यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न होने के बाद प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. नरेश दत्त आर्य जी के भजन हुए। उन्होंने पहला भजन प्रस्तुत किया। इस भजन के बोल थे 'उठ अब तो ईश्वर का गुणगान कर ले, प्रभु प्यारे प्रीतम का अब तो ध्यान कर ले।' पं. नरेश दत्त आर्य जी ने प्रश्न उठाया कि ईश्वर की उपासना से मनुष्य को क्या वस्तु प्राप्त होती है? उन्होंने गाकर कहा कि 'क्या कहें क्या भक्त पाता है प्रभु के ध्यान से, कुछ अलौकिक रत्न पाता है प्रभु के ध्यान से। ज्ञान के आलोक से जगमगाता है हृदय, रंग बिरंगे फूल खिलते और संशयों का नाश होता है ईश्वर का ध्यान करने से।' उन्होंने आगे कहा कि ईश्वर का ध्यान करने से मनुष्य को साधना का मार्ग मिलता है और उसका आध्यात्मिक उत्थान भी होता है। आचार्य नरेश दत्त आर्य जी ने कहा कि ईश्वर की उपासना व ध्यान करने से ज्ञान की प्राप्ति होने सहित आत्मा की उन्नति भी होती है। मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है और इससे मनुष्य को सुखों की प्राप्ति और आयु की वृद्धि भी होती है।

कार्यक्रम का संचालन प्रसिद्ध विद्वान् श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, हरिद्वार ने किया। उन्होंने कुशलता से संचालन करने के साथ अनेक प्रेरक वचन भी कहे जिन्हें जीवन में आचरण में लाने से जीवन की उन्नति के द्वार खुलते हैं। इसी के साथ आज ग्रीष्म उत्सव का पहला प्रातःकालीन सत्र समाप्त हुआ। इसके बाद ध्वजारोहण हुआ और तत्पश्चात 10 बजे से 12.00 बजे तक आश्रम के सभागार में 'राष्ट्र रक्षा सम्मेलन' भव्य रूप में सम्पन्न हुआ।

अपील

वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी, देहरादून द्वारा संचालित वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुलम् के लिए पाँच कम्प्यूटर (संगणक) तथा दो लैपटॉप की अत्यन्त आवश्यकता है। दानी महानुभावों से अपील की जाती है उपर्युक्त संस्थाओं की सहायता करके पुण्य के भागी बनें। दानी महानुभाव अधो लिखित मोबाईल नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रेम प्रकाश शर्मा, सचिव
वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून,
मो० : 9412051586

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुलम् की सदस्यता हेतु विवरण

वैदिक धर्म की रक्षा तथा आर्ष विद्या के प्रचार–प्रसार को गति देने के लिए **वैदिक साधन आश्रम तपोवन सोसाइटी देहरादून** की कार्यकारिणी ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया है कि तपोवन आश्रम परिसर में वेदोक्त शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु युवकों के लिए गुरुकुल की स्थापना की जाए। यह गुरुकुल उत्तराखण्ड संस्कृत शिक्षा परिषद् के पाठ्यक्रम के अनुसार कक्षा बारह तक संचालित होगा। प्रारम्भिक काल में कक्षा छह से कक्षा दस तक की कक्षाएँ ही चलाई जायेंगी, जिसमें मुख्यतः

निम्नलिखित विषय पढ़ाए जायेंगे–**(1) संस्कृत(2) हिन्दी(3) अंग्रेजी(4) गणित(5) विज्ञान(6) संस्कृत व्याकरण(7) कम्प्यूटर** उपर्युक्त सभी विषयों को पढ़ाने के लिए आचार्यों की व्यवस्था हो गयी है। प्रथम वर्ष में कक्षा छह में प्रवेश होगा। गुरुकुल के सुचारु रूप से संचालन के लिए गुरुकुल की एक समिति गठित की जाएगी जिसका गठन उत्तराखण्ड संस्कृत शिक्षा परिषद् के द्वारा जारी नियमावली के अनुसार होगा। इसी समिति के सदस्यों द्वारा कार्यकारिणी का चयन किया जाएगा। समिति में तीन प्रकार के सदस्य होंगे।

(1) साधारण सदस्यः–	(2) आजीवन सदस्यः–	(3) आजीवन एवं संस्थापक सदस्यः–
रजिस्ट्रेशन शुल्क 501 रुपये तीन वर्ष के लिए केवल एक बार	रजिस्ट्रेशन शुल्क 2100 रुपये केवल एक बार	रजिस्ट्रेशन शुल्क 5100 रुपये केवल एक बार
500 रुपये प्रतिमाह अथवा अधिक योगदान	2000 रुपये प्रतिमाह अथवा अधिक योगदान	5000 रुपये प्रतिमाह योगदान अथवा 11 लाख एक मुश्त योगदान

इस प्रकार रजिस्ट्रेशन शुल्क से जो धन एकत्रित होगा उसे संस्कृत शिक्षा परिषद् के नियमों के अनुपालन में एफ. डी. के रूप में रखा जाएगा तथा प्रतिमाह प्राप्त योगदान से आचार्यों का वेतन, छात्रों के आवास, भोजन, वस्त्र एवं पुस्तकों आदि की व्यवस्था की जाएगी।

गुरुकुल के लिए कुछ और कक्षों का निर्माण कराना होगा तथा जंगली जानवरों से सुरक्षा के लिए गुरुकुल परिसर की बाउन्ड्री वाल की मरम्मत तथा दस फुट ऊँची फेन्सिंग भी करानी होगी। इन सब कार्यों के लिए समाज के सभी प्रबुद्ध भाई बहनों से प्रार्थना की जाती है कि वह इस पुण्य कार्य में तन, मन, धन से सहयोग करें ताकि हमारा गरुकुल संचालन का यह संकल्प ईश कृपा से तथा आप सभी महानुभावों के सहयोग से सफल हो सके। रजिस्ट्रेशन शुल्क तथा प्रत्येक माह की सहयोग राशि पंजाब नेशनल बैंक के अकाउन्ट– वैदिक साधन आश्रम A/C No-00022010029560 IFSC Code PUNB0000210 में अथवा QR Code से जमा करा सकते हैं। इस मद से दी गई धनराशि पर Incom Tax कि धारा 80G - AAAAV1656LF2021401 के अन्तर्गत छूट उपलब्ध हैं।

SCAN & PAY

गुरुकुल का सदस्यता फार्म संलग्न है। जो सदस्य पूरे वर्ष का योगदान एक बार में ही देना चाहते हैं वह एक मुश्त जमा कर सकते हैं।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुलम्

नालापानी, देहरादून पिन–248008

सदस्यता प्रपत्र

सदस्य का नाम .... जन्म तिथि ....

पिता / पति का नाम ....

वर्तमान पूरा पता ....

....

आधार संख्या .... पैन नम्बर ....

मोबाईल नंबर ....

ईमेल आईडी ....

सदस्यता का प्रकार – साधारण सदस्य / आजीवन सदस्य / आजीवन संस्थापक सदस्य.............

....

रजिस्टर रजिस्ट्रेशन संख्या (कार्यालय द्वारा) ....

रजिस्ट्रेशन रसीद संख्या (कार्यालय द्वारा) .... दिनांक ....

धनराशि ....

प्रतिमाह देय धनराशि ....

शपथ पत्र

मैं शपथ लेता हूँ / लेती हूँ कि मैं ....

वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुल की सहायता ....

रूपए प्रतिमाह की दर से प्रदान करता रहूँगा।

दिनांक हस्ताक्षर

नोट : उपर्युक्त फार्म भरकर वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी, देहरादून के उपरिलिखित पते पर भेजने का कष्ट करें।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुलम् को प्राप्त धनराशि (माह 31/5/25 तक) रु. 11,40,179

क्र.सं.	नाम व पता	रसीद नं./दिनांक	रजिस्ट्रेशन धनराशि	धनराशि
	सर्वश्री			
1.	सुरेश कुमार गुप्ता, देहरादून	1790 / 1-5-25		2000
2.	कुश मिगलानी, दिल्ली	1791 / 4-5-25		500
3.	नरेश सिंह, गाजियाबाद	1792 / 6-5-25		500
4.	निशान्त कुमार, गाजियाबाद	1793 / 6-5-25		5000
5.	नरेश सिंह, गाजियाबाद	1794 / 6-5-25		5000
6.	केवल सिंह आर्य, पानीपत	1796 / 6-5-25		6000
7.	निशान्त कुमार, गाजियाबाद	1795 / 6-5-25		5000
8.	विरेन्द्र कुमार कनवर, आगरा	1797 / 13-5-25		1001
9.	राजबाला सिरोही, देहरादून	1798 / 14-5-25		1100
10.	प्रेमप्रकाश शर्मा, देहरादून	1799 / 14-5-25		5000
11.	सुनील अग्रवाल, देहरादून	1800 / 14-5-25		5000
12.	श्रीमती अनिता अग्रवाल, देहरादून	1901 / 14-5-25		5000
13.	डॉ. मनवीर सिंह, देहरादून	1902 / 14-5-25		500
14.	विजयपाल, हरिद्वार	1903 / 15-5-25		1000
15.	मूल शंकर जी, दिल्ली	1904 / 17-5-25		1500
16.	एन.एस अहलूवालिया, देहरादून	1905 / 17-5-25		3000
17.	मधु, नई दिल्ली	1906 / 17-5-25		2000
18.	मूल शंकर, दिल्ली	1907 / 17-5-25		500
19.	विजेश आहूजा	1909 / 17-5-25		10100
20.	विशाल मलिक	1910 / 17-5-25		10100
21.	पतराम आर्य	1911 / 17-5-25		500
22.	इन्द्रपाल लुधियाना	1912 / 17-5-25		2200
23.	अश्विनी कुमार, लुधियाना	1913 / 17-5-25		500
24.	सुरेन्द्र रावत	1914 / 17-5-25		500
25.	कृष्ण कुमार आर्य	1915 / 17-5-25		1100
26.	भावना सिसोदिया, आगरा	1916 / 17-5-25		500
27.	हरिन्दर योग चरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली	1917 / 17-5-25		50000
28.	धर्मपाल शर्मा, प्रेमनगर	1918 / 18-5-25		3000
29.	महेन्द्र सिंह चौहान	1919 / 18-5-25		1100
30.	राजन शर्मा, गुरुग्राम	1920 / 20-5-25		5000
31.	रवि मल्होत्रा, देहरादून	1921 / 22-5-25		5000
32.	जगदीश चन्द्र कपूर, लुधियाना	1922 / 22-5-25		5100
33.	अशोक कुमार वर्मा, देहरादून	1923 / 28-5-25		5000
34.	मनिश कुमार वर्मा	1924 / 28-5-25		5000
35.	कुश मिगलानी, दिल्ली	1925 / 31-5-25		1000
			योग	**155301**

वैदिक साधन आश्रम दान दाताओं की सूची
जुलाई 2025 की पवमान पत्रिका में प्रकाशन हेतु

क्र.सं.	सर्वश्री/श्रीमती नाम व पता	दान राशि
1.	शिव देव जी, देहरादून	2500
2.	ए.के. अग्रवाल	5100
3.	रवीन्द्र कुमार, दिल्ली	3500
4.	संजय गोयल	6000
5.	राकेश वर्मा, फरीदाबाद	1100
6.	गुंजन तिवारी, देहरादून	2500
7.	सत्यपाल आर्य, देहरादून	1000
8.	कमलचन्द पोद्दार, ग्रेटर नौएडा	1000
9.	राजन शर्मा, गुरुग्राम	5000
10.	इन्द्रजीत आर्य, कालावाली	1000
11.	अशोक अरोड़ा, देहरादून	5000
12.	केवल कृष्णा शैली, देहरादून	11000
13.	उपेन्द्र आर्य, देहरादून	5000
14.	अथर्व कामरा, दिल्ली	1600
15.	जय प्रकाश आर्य, नौएडा	2100
16.	संजय गोयल, नौएडा	6000
17.	कुलदीप सिंह चौहान, नालापानी	5000
18.	रणजीत राय कपूर, नत्थनपुर	2100
19.	राम किशन मलिक, पानीपत	1100
20.	केसर सिंह, तपोवन आश्रम	1000
21.	वेद कुमारी, देहरादून	5000
22.	धीरेन्द्र मोहन सचदेवा, देहरादून	2100
23.	पं. सूरतराम शर्मा, तपोवन आश्रम	1100
24.	माता स्वदेश धवन, तपोवन आश्रम	5100
25.	प्रेम चन्द शर्मा, कासगंज	1100
26.	ब्रजेश आर्य, दिल्ली	1100
27.	जय प्रकाश सिंह, लाडपुर, देहरादून	2100
28.	ओम प्रकाश, दिल्ली	1100
29.	ओ.पी. भोला, नौएडा	1100
30.	स्व. गजेन्द्र सिंह नेगी, देहरादून	1100
31.	सुभाष चन्द्र आर्य, हाथरस	1100
32.	राकेश उप्रेती, देहरादून	1100

क्र.सं.	नाम व पता	दान राशि
33.	मुकेश जोशी, सरोजनी जोशी, देहरादून	1100
34.	सरोजिनी जोशी, देहरादून	1100
35.	प्रेम बल्लभ, देहरादून	1000
36.	विजय पाल आर्य, हरिद्वार	1100
37.	जगदीश चन्द्र, गाजियाबाद	10000
38.	सविता नारंग, दिल्ली	3100
39.	शकुन्तला कालरा, दिल्ली	2100
40.	पुष्पा गोगिया, दिल्ली	5100
41.	नीरज काम्बोज, गुरुग्राम	2100
42.	स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, धौलास आश्रम	2100
43.	रमेश दत्त दीवान, मेरठ	10000
44.	संजय गोयल, नौएडा	2000
45.	जीवनी सिंघल, गाजियाबाद	1000
46.	दयानन्द तिवारी, देहरादून	1100
47.	जितेन्द्र सिंह तोमर, देहरादून	1100
48.	हरि किशोर महेन्द्रा, विकासनगर	1100
49.	सुदेश शर्मा, यमुनानगर	5000
50.	आचार्य हुकुम सिंह, आगरा	1100
51.	आर्य समाज लक्ष्मण चौक, देहरादून	1000
52.	एस.एस. डुडेजा, फरीदाबाद	1100
53.	सुशील भाटिया, चंडीगढ़	1601
54.	भारती गुप्ता, फरीदाबाद	1000
55.	सुशीला अरोड़ा, फरीदाबाद	2100
56.	दीपक वर्मा, फरीदाबाद	30000
57.	सत्य प्रकाश अरोड़ा, फरीदाबाद	1100
58.	विमल सचदेवा, फरीदाबाद	1100
59.	नीलम गिरधर, फरीदाबाद	1100
60.	संगीता विज, फरीदाबाद	1000
61.	संतोष जसुजा, फरीदाबाद	3100
62.	कमलेश मदान, फरीदाबाद	1100
63.	सोमदत्त जी, मुजफ्फरनगर	2100

BASANTA MAL SAT PRAKASH

Manufactures of : All Kinds of Shawls & Lohies

M : 094171-36756, 70877-54848

GHASS MANDI, LUDHIANA

हमारे पास बेबी सॉफ्ट शॉल, पूजा शॉल, स्टॉल, मिक्सचर लोई, जैकेट शॉल, कढ़ाई शॉल, कैशमीलोन प्लेन क्लॉथ, चैक शर्टिंग क्लॉथ में हर प्रकार की वैरायटी बनती है और रेट भी कम हैं। कृपया एक बार जरूर सम्पर्क करें।

ARYA TEXTILE

Manufactures of :

All Kinds of Handloom Bed Sheets & Furnishing Fabrics

M : 98963-19774, 95412-88174, 98964-01919

Specialist in : BABY BLANKETS & READYMADE CURTAINS

हम Readymade Curtains, Jackets, Guddad, Loi, Mat, Baby Soft Shawls, Baby Blankets, Acrylic Blankets, Rajai Khol (Dohar), Rajai, Comforter, AC Set, Velvet Joda & 3D Bed Sheets, Dhari etc. आदि के निर्माता हैं। इसके अलावा मिंक व पोलर कम्बल (Mink & Polar) आदि भी बेचते हैं और रेट भी कम हैं। कृपया एक बार जरूर सम्पर्क करें।

Factory :
Opp. RK School
Kutani Road, Panipat-132103

PREMIUM
Premium Quality
QUALITY

Shop :
665/4, Pachranga Bazar,
Panipat-132103

Baby Blankets / Mink Blankets / Quilts / Comforters / Jackets / Duvet Covers / Shawls / Fleece Blankets

वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुलम् नालापानी देहरादून एक परिचय

–आचार्य रवीन्द्र कुमार आर्य, प्रधानाचार्य

वैदिक साधन आश्रम तपोवन गुरुकुलम् नालापानी देहरादून का उद्घाटन 18 अक्टूबर 2024 को सम्पन्न होने के पश्चात् निरन्तर गुरुकुलम् के कार्यकलाप को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। मार्च 2025 में उत्तराखण्ड संस्कृत शिक्षा परिषद् से मान्यता प्राप्त होने के बाद अप्रैल से विधिवत् शिक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। गुरुकुलम् के कार्यों को गति देने के लिए आचार्य रवीन्द्र कुमार आर्य (प्रधानाचार्य) आचार्य किरण कुमार आर्य (सहायक अध्यापक योगी), सुरेन्द्र सिंह नेगी (सहायक अध्यापक आधुनिक विषय), श्रीमती ज्योति वर्मा (स.अ. अंग्रेजी) निरन्तर छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य कर रहे हैं। आज 04/06/25 तक गुरुकुलम् में ग्यारह छात्र अध्ययनरत हैं जो कि बिहार, बदायूँ, हरदोई, उन्नाव, मुज़फ्फरनगर, दिल्ली तथा देहरादून आदि स्थानों से आये हैं। हमारा प्रयास है आधुनिक विषयों के साथ–साथ छात्रों को पुरातन वैदिक शिक्षा, भारतीय वैदिक जीवन मूल्यों से भी भलीभाँति परिचित ही नहीं कराया जाए अपितु उन जीवन मूल्यों को वे अपने जीवन में आत्मसात् भी करें। वैदिक साधन आश्रम के इस पवित्र वातावरण में (जहाँ अनेक सन्तों, साधकों, विद्वानों ने साधना की है) रहकर ये ब्रह्मचारी भी सच्चे साधक, तपस्वी, योगी और विद्वान् बनकर आज के भटके हुए समाज को एक नयी दिशा देने का काम करेंगे ऐसी मुझे पूर्ण आशा है। ऐसा भी समय एक दिन आयेगा जब हम कह सकेंगे कि

''आयेंगे खत अरब से, जिनमें लिखा यह होगा।
गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है।।''

इस गुरुकुल का स्वप्न देखकर इसको मूर्त रूप देने वाले हमारे आश्रम के कर्मठ, धर्मात्मा, दानवीर मन्त्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी निरन्तर गुरुकुल के उज्ज्वल भविष्य के लिए कार्य कर रहे हैं। मैं समाज के सभी प्रबुद्ध वर्ग से निवेदन करना चाहता हूँ कि समाज, राष्ट्र, धर्म और संस्कृति के लिए समर्पित इस गुरुकुल के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग कर पुण्य के भागी बनें।

तपोवन विद्या निकेतन, नालापानी, देहरादून

Faculty Development Programme 2025

(1) दिनांक 25–05–2025 और दिनांक 29–05–2025 को श्रीमती अनीता अग्रवाल शैमरॉक रेनबो स्कूल की संचालिका जी ने अपना बहुमूल्य समय देकर हमारी शिक्षिकाओं को प्री प्राइमरी कक्षाओं में नई शिक्षा नीति के अनुसार पढ़ाने और लिखाने की विधि को विस्तारपूर्वक समझाया।

(2) दिनांक 26–05–2025 को श्री सुनील मानसिंह जी हमारे विद्यालय तपोवन विद्या निकेतन में शिक्षक/शिक्षिकाओं का मार्गदर्शन करने के लिए आए। श्रीमान सिंह जी एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से साहित्य में स्नातक शिक्षक, पत्रकार, रेडियोजॉकी, रंगमंचकर्मी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने नवीन शैक्षणिक सामग्री व शिक्षण पद्धति और टीम वर्क बच्चों को कैसे सिखाना पर चर्चाएँ की।

(3) दिनांक 27–05–2025 को श्रीमती कृतिका मानसिंह मुख्यध्यापिका द टॉन्सब्रिज डे एवं रेजिडेंशियल स्कूल देहरादून और उनके सहयोगी श्री ए.के. अग्रवाल उप–प्रधानाचार्य द टॉन्सब्रिज भी हमारे विद्यालय में अध्यापक/अध्यापिकाओं को नई शिक्षा नीति और योग्यता आधारित शिक्षा के बारे में जानकारियाँ साझा की। श्रीमती कृतिका मानसिंह एक अनुभवी शिक्षिका, स्कूल लीडर व प्रशिक्षक है। उन्होंने हमें नई शिक्षा नीति के अनुरूप राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा, रूपरेखा, मूल्यांकन प्रणालियाँ, अनुभवात्मक अधिगम और भविष्य उन्मुख विद्यालय निर्माण जैसे विषयों के बारे में जानकारियाँ दी।

(4) दिनांक 28–5–2025 को श्री मधुकर धीमान और मनोचिकित्सक कर्नल कार्तिकेय सिंह जी आए। उन्होंने हमें बच्चों में पाए जाने वाले मानसिक विकारों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां दी। उन्होंने बच्चों के मानसिक विकारों को पहचानने के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु बताए तथा हमें आश्वासन दिया कि बच्चों के मानसिक विकास के लिए हम हर सम्भव सहायता करेंगे।

हमारे विद्यालय के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी ने प्रतिदिन विद्यालय आकर उपर्युक्त Faculty members को ओ३म् का अंगवस्त्र व स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का चित्र स्मृतिस्वरूप देकर उनका स्वागत सत्कार किया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती ऊषा नेगी जी ने उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम तपोवन का ग्रीष्मोत्सव

संसार में सबसे पुराना मत वा धर्म वैदिक मत है, महाभारत काल तक संसार की सभी जनता आर्य थी, भारत के युधिष्ठिर महाराज विश्व के चक्रवर्ती सम्राट् थे : पं. उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ

–मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का शरदुत्सव बुधवार दिनांक 14–5–2025 को आरम्भ हो चुका है। कल उत्सव के प्रथम दिवस पर प्रातःकाल की वेला में चार यज्ञवेदियों पर यज्ञ हुआ। इसका वृतान्त हम अपने मित्रों से साझा कर चुके हैं। कल यज्ञ के पश्चात् ध्वजारोहण का कार्य भी सम्पादित किया गया। ध्वजारोहण के आरम्भ में सभी आमंत्रित विद्वानों एवं आर्यजनों सहित स्कूल के बच्चों ने स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना के आठ मन्त्रों का पाठ किया। इसके बाद राष्ट्रीय प्रार्थना 'ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां' हुई। इस प्रार्थना के बाद तपोवन आश्रम द्वारा संचालित तपोवन विद्या निकेतन के बच्चों द्वारा गाये ध्वजगीत 'जयति ओम् ध्वज व्योम विहारी विश्वप्रेम प्रतिमा अति प्यारी' का सभी उपस्थित लोगों ने बच्चों के स्वर में स्वर मिलाकर गान किया। ध्वजगीत के बाद स्वामी योगेश्वरानन्द जी का सम्बोधन हुआ। स्वामी जी ने कहा कि ध्वजारोहण इस बात का प्रतीक है कि इसे गाने वाले हम वेदानुयायी हैं। ध्वजारोहण यह भी बताता है कि हम सब सनातन वैदिक संस्कृति के अनुयायी हैं। स्वामी जी ने कहा कि ओ३म् ध्वज समस्त विश्व में लहराना चाहिये। सब आर्यों को अपने घरों पर ओ३म् ध्वज फहराकर आर्य होने का परिचय देना चाहिये। उन्होंने कहा कि सनातन आर्य धर्म को मिटाने की देश में साजिशें चल रही हैं। स्वामी जी ने यह भी कहा अपने घरों पर ओ३म् ध्वज को फहराने से हम आर्यों की पहचान बनती है। अपने सम्बोधन में आश्रम के यशस्वी मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने सभी बाहर से आये सभी अतिथियों का अभिनन्दन किया। उन्होंने आश्रम की गतिविधियों की जानकारी दी और बताया कि आश्रम का मुख्य उद्देश्य साधकों को ईश्वर उपासना विषयक की जाने वाली साधना की सब सुविधायें प्रदान करना है। यहाँ साधना संबंधी सभी सुविधायें उपलब्ध हैं। सब साधना प्रेमियों को यहाँ आकर साधना करके आत्मिक उन्नति का लाभ उठाना चाहिये।

ध्वजारोहण के बाद कुछ समय का नाश्ते के लिये विराम लिया गया। इसके बाद 10.00 बजे से आश्रम के सभागार में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि आश्रम क्षेत्र के विधायक श्री उमेश शर्मा जी का सम्मान किया गया। सम्मेलन में पहली प्रस्तुति पंडित नरेन्द्र दत्त आर्य जी के एक भजन से हुई। इसके बाद श्री नरेश दत्त आर्य जी का राष्ट्र रक्षा पर एक प्रभावशाली गीत हुआ। भजन से पहले उन्होंने

राष्ट्रीय प्रार्थना का गीत 'ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म तेजधारी' मधुर स्वरों में गाकर प्रस्तुत किया। श्री नरेश दत्त जी द्वारा इसके बाद प्रस्तुत गीत व भजन था 'धरती मेरी माता पिता आसमान मुझको तो अपना सा लागे सारा जहान'। श्री आर्य ने कहा कि हमारा आर्यावर्त सारी दुनिया से न्यारा देश है। श्री नरेश दत्त आर्य जी ने राष्ट्र रक्षा से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण बातें भी कहीं।

अपने सम्बोधन में आगरा से पधारे वैदिक विद्वान् श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने बहुत गहरा राष्ट्र चिन्तन किया था। आचार्य जी ने ऋषि दयानन्द जी के तपस्यापूर्ण जीवन का परिचय श्रोताओं को दिया। आचार्य जी ने आर्य जाति के पतन के दो कारण बताये। पहला कारण था कि ब्राह्मण वर्ग वेद से हट गया था अर्थात् वह वेद से दूर हो गया था। दूसरा कारण था कि स्वदेशी राजा ईर्ष्या द्वेष एवं भोग विलासों में फँसे हुए थे। जनता से राजाओं का सम्पर्क एवं सम्बन्ध न था। सभी राजा गोरक्षा का महत्व भूल गये थे। गोरक्षा कार्यों की उपेक्षा हो रही थी। देश पराधीन हो गया था। ऋषि दयानन्द जी ने देशवासियों को वेदों की ओर वापस लौटने का नारा दिया। उन्होंने राजाओं को राजधर्म का पाठ पढ़ाया। ऋषि दयानन्द ने राजाओं को कहा कि उन्हें प्रजा के सुख शान्ति की चिन्ता करनी चाहिये। ऋषि दयानन्द ने आर्यजाति के मनों से ईर्ष्या व द्वेष की भावना को निकालने का प्रयास किया। आचार्य जी ने कहा कि महाभारत के युद्ध में देश के राज परिवारों के लोग अपने ही भाईयों से लड़े थे। तब भारत में न मुसलमान थे और न ही अंग्रेज थे। वैदिक विद्वान आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि हमारी परस्पर की ईर्ष्या व द्वेष आदि अवगुणों ने देश को पराधीनता के दुःख से आक्रान्त किया था। आचार्य जी ने हिन्दू समाज में जातिवाद सहित ऊँच–नीच की भावना की चर्चा की। उन्होंने कहा कि देश में दलितों व पिछड़े लोगों को पढ़ने लिखने का अधिकार नहीं था। यह वर्ग शिक्षा से वंचित थे। समाज में अशिक्षा एवं ऊंच–नीच आदि के व्यहारों का लाभ मुसलमानों और ईसाईयों ने उठाया और इन बन्धुओं को अपने मत में मिलाया। इसका परिणाम ही सन् 1947 में देश के बँटवारे के रूप में सामने आया।

आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि संसार में सबसे पुराना मत वा धर्म वैदिक मत है। महाभारत काल तक संसार की सभी जनता आर्य थी। भारत के युधिष्ठिर महाराज विश्व के चक्रवर्ती सम्राट् थे। महाभारत काल के बाद से ही देश का पतन होना आरम्भ हुआ। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने समाज में प्रचलित सभी अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों को समाप्त किया। उन्होंने दोहराया कि हिन्दुओं के जातिगत भेदभाव के कारण देश का बँटवारा हुआ था। विद्वान् वक्ता कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि भारत का नवजागरण आर्यसमाज की देन है। देश व समाज के सभी क्षेत्रों में आर्यसमाज ने नवजागरण किया है। उन्होंने बताया कि आज भी कुछ क्षेत्रों में हमारे दलित बन्धु सवर्णों से अपमान झेल रहे हैं। इसके कुछ उदाहरण भी आचार्य जी ने दिए। आचार्य जी ने दलितों के प्रति इस आचरण की आलोचना की। आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने बताया कि सवर्ण एवं दलित बन्धुओं का रक्त एक समान वा एक जैसा है। उनके रक्त में किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं है। उन्होंने कहा कि इस कारण से

सवर्ण एवं पिछड़े बन्धुओं में छुआछूत आदि की भावना का होना अनुचित एवं अव्यवहारिक है।

आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि आर्यसमाज की स्थापना से देश को आजादी प्राप्त होने तक का समय आर्यसमाज का स्वर्णिम काल था। उन्होंने बताया कि हम आर्यों ने हैदराबाद में अपने बन्धु हिन्दुओं के लिए ही आर्य सत्याग्रह किया था और इसमें सफलता प्राप्त की थी। आचार्य जी ने कहा कि हिन्दुओं की कुरीतियों व अन्धविश्वासों के कारण देश के कई राज्यों में हिन्दू अल्पसंख्यक हो गये हैं। उन्होंने कहा कि जिस राष्ट्र की सेना मजबूत होती है वह राष्ट्र मजबूत होता है। सेना की मजबूती के लिये लिये राष्ट्र की आय अधिक होनी चाहिये अर्थात् आर्थिक स्थिति अच्छी व सुदृढ़ होनी चाहिये। राष्ट्र की आर्थिक स्थिति अच्छी व मजबूत हो इसके लिये राष्ट्र का निर्यात अधिक और आयात कम होना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि देश को सुखी व समृद्ध बनाने के लिये ऋषि दयानन्द ने चिन्तन किया था और इसके लिये जर्मनी के विद्वानों को भारत के युवाओं को तकनीकि शिक्षा देने के लिये पत्रव्यवहार किया था। ऋषि दयानन्द जी ने देशवासियों को गोपालन व गोरक्षा की प्रेरणा भी दी थी और इसके लिए स्वयं भी अनेक प्रयास किये थे। ऋषि दयानन्द जी की ही प्रेरणा से हरियाणा में पहली स्वदेशी गोशाला बनी थी। आचार्य जी ने भारत के पाकिस्तान के साथ चार युद्धों का भी उल्लेख किया और भारत द्वारा प्राप्त की गई विजयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। आचार्य जी ने कहा कि भारत नीतियों में कमजोर देश रहा है। भारत ने पाकिस्तान के साथ चार लड़ाईयाँ लड़ी और विजयी रहा परन्तु इस पर भी भारत को कुछ मिला नहीं। हमने जो जीता था उसे बिना किसी समस्या को हल किये शत्रु देश को लौटा दिया। आचार्य जी ने यह भी कहा कि भारत को चन्द्रगुप्त मौर्य जैसा प्रधान मंत्री अभी तक नहीं मिला है।

आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने नारी शिक्षा का महत्व प्रतिपादित किया था तथा आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने देश में नारी शिक्षा की संस्थायें स्थापित की थीं। उन्होंने कहा कि राष्ट्र की रक्षा एवं इसकी सुख समृद्धि के लिये नारी शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। आचार्य जी ने यह भी कहा कि देश की एकता एवं अखण्डता के लिये देश की एक सम्पर्क भाषा होनी चाहिये। वह भाषा हिन्दी ही हो सकती है। इस हिन्दी भाषा का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार होना चाहिये। उन्होंने बताया कि महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में अपनी मातृभाषा गुजराती के स्थान पर हिन्दी में ही ग्रन्थों का लेखन एवं देश भर में प्रचार किया था। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द का हिन्दी में लिखा ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश देश को एकता के सूत्र में बाँधता है। इसी के साथ आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने अपने वक्तव्य को विराम दिया।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में समापन उद्‌बोधन स्वामी योगेश्वरानन्द जी का हुआ। उन्होंने श्रोताओं को कहा कि हम राष्ट्र के जागृत् पुरोहित व नागरिक बनें। उन्होंने आगे कहा कि अनीति व अधर्म के साथ जीने वाला व्यक्ति देश का अच्छा नागरिक नहीं बन सकता। उन्होंने आगे कहा कि हमें जागना है। बच्चे राष्ट्र की धरोहर हैं। बच्चों के कन्धों पर ही हमारा राष्ट्र टिका हुआ है। स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि हमारे राष्ट्र की रक्षा तभी होगी

जब हमारे सभी नागरिक पूर्ण रूप से स्वस्थ होंगे। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये देश के सभी बच्चों एवं युवाओं का भोजन शुद्ध एवं पौष्टिक होना चाहिये।

स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि जब हम अच्छा वैदिक जीवन जीयेंगे तो हमारा जीवन बनेगा और बोलेगा भी। उन्होंने कहा कि यदि हमारी युवा शक्ति दुर्बल है तो हमारा देश शक्तिशाली नहीं बन सकता। स्वामी जी ने कहा कि जो बच्चे शुद्ध भोजन करने सहित व्यायाम भी करते हैं और इसके साथ ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर उसका ध्यान व उपासना करते हैं, उन्हें सुन्दर दीखने के लिये पाउडर और क्रीम लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। स्वामी जी ने कहा कि टीवी के विज्ञापनों ने हमारे समाज व युवापीढ़ी को भटकाया है। स्वामी जी ने भारत के पहलवान राममूर्ति का उल्लेख कर बताया कि वह शाकाहारी पहलवान थे और उन्होंने एक मांसाहारी विदेशी विख्यात पहलवान पर मुक्के का प्रहार करके उसके सिर को फोड़ दिया था। ऋषि दयानन्द के अनुयायी स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती ने कहा कि जिन बच्चों को वैदिक सन्ध्या करनी नहीं आती उन्हें कुछ मिनटों तक गायत्री मन्त्र का अर्थ सहित जप व पाठ कर ईश्वर का ध्यान व सन्ध्या करनी चाहिये। ऐसे बच्चों को वैदिक साधन आश्रम में आकर यहाँ के विद्वानों से सन्ध्या को भली प्रकार से जानना व सीखना चाहिये। हमारी युवा पीढ़ी को देश के महापुरुषों यथा ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द सहित वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्द सिंह जी एवं आचार्य चाणक्य के जीवन चरित्रों को पढ़ना चाहिये। स्वामी योगेश्वरानन्द जी ने ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र को पढ़ने के लाभ भी श्रोताओं को बतायें। स्वामी जी ने कहा बच्चों के अन्दर वीरत्व की भावना होनी चाहिये। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए स्वामी जी ने कहा कि आर्यसमाज वह संस्था है जो देश व समाज को सही दिशा दिखाती है। इसके बाद चाँदपुर, बिजनौर से पधारे ऋषिभक्त श्री अतुल भाटिया जी का संक्षिप्त सम्बोधन हुआ। उन्होंने कहा कि हमें ऋषि ऋण, देव ऋण और पितृ ऋण को जानना चाहिये और उसे उतारने के लिये प्रयत्न करने चाहियें। भाटिया जी ने कहा कि हमें अपने माता, पिता और गुरुजनों की आज्ञाओं का पालन करने सहित उनकी तन, मन व धन से सेवा भी करनी चाहिये। इसी के साथ तपोवन आश्रम में आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्याक्रम का बहुत ही अच्छा संचालन वैदिक विद्वान पं. शैलेशमुनि सत्यार्थी, हरिद्वार ने किया। सम्मेलन में अनेक विद्वान, गणमान्य व्यक्ति एवं देश के अनेक स्थानों से पधारे ऋषि दयानन्द के अनुयायी उपस्थित थे। ओ३म् शम्।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून

द्वारा आयोजित **शरदुत्सव**

29 अक्टूबर 2025 से 2 नवम्बर 2025 तक

वेदों में आत्मतत्व

संकलनकर्त्ता-पं० महेन्द्र कुमार आर्य

ऋग्वेद में आत्मा का स्वरूप

1. नूचित्सहोजा अमृतो नि तुन्दते होता यद्दूतो अभवद्विवस्वतः।
वि साधिष्ठेभिः पथिभी रजो मम आ देवताता हविषा विवासति।।

मण्डल एक सूक्त 58 मन्त्र 1

अर्थ-हे मनुष्यों! जो विद्युत के समान स्वप्रकाशस्वरुप नाशरहित बल को उत्पन्न करने हारा, कर्मफल का भोक्ता, सब मन और शरीर आदि का धर्ता, सबको चलाने वाला होता है। दिव्य पदार्थों के मध्य में दिव्यस्वरूप अधिष्ठानों के साथ वर्तमान मार्गों से पृथिवी, आदि लोकों को शीघ्र बनाने वाला स्वप्रकाश-स्वरूप परमेश्वर के मध्य में वर्तमान होकर ग्रहण किए हुए शरीर सहित निरन्तर जन्म-मरण में पीड़ित होता, अपने कर्मों के फलों का सेवन करता, अपने कर्म में सब प्रकार से वर्तता है, वह जीवात्मा है ऐसा तुम लोग जानो।

2. आ स्वमद्म युवमानो अजरस्तृष्वविष्यन्नतसेषु तिष्ठति।
अत्यो न पृष्ठं प्रषितस्य रोचते दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदत्।।

मण्डल एक सूक्त 58 मन्त्र 2

अर्थ-हे मनुष्यों! तुम जो संयोग और विभाग-कर्त्ता जरादि रोगरहित देह, आदि की रक्षा करने वाला होता हुआ आकाशादि पदार्थों में स्थित होता पूर्ण परमात्मा में कार्य का सेवन करता हुआ जैसे घोड़ा अपनी पीठ पर भार को बहाता है, वैसे देहादि को बहाता है। जैसे प्रकाश से पर्वत के शिखर वा मेघ की घटा प्रकाशित होती हे वैसे सर्वथा शब्द करता है जो अपने किए भोक्तम कर्म को शीघ्र सब प्रकार से भोगता है, वह देह का धारण करने वाला जीव है।

3. क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता निषत्तो रयिषाळमर्त्यः।
रथो न विष्वृञ्जसान आयुषु व्यानुष्वार्या देव ऋण्वति।।

मण्डल एक सूक्त 58 मन्त्र 3

अर्थ-हे मनुष्यों! तुम प्राणों और वास देने हारे पृथिवी, आदि पदार्थों के साथ स्थित चलता-फिरता देहादि को धारण करने वाला प्रथम ग्रहण करने योग्य धन का सहनकर्त्ता मरणधर्म-रहित कर्मों का कर्ता, जो किए हुए कर्म को प्राप्त होता, प्रजाओं में रथ के समान शरीर सहित होके बाल्यादि जीवनावस्थाओं में अनुकूलता से वर्तमान उत्तम पदार्थ और सुख को विविध प्रकार सिद्ध करता है, वही शुद्ध प्रकाशस्वरूप जीवात्मा है।

4. द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते।
तयोरन्याः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति।।

मण्डल एक सूक्त 164 मन्त्र 20

अर्थ-हे मनुष्यों! जो सुन्दर पंखों वाले समान सम्बन्ध रखने वाले मित्रों के समान वर्त्तमान दो पक्षी, एक जो काटा जाता है, उस वृक्ष का आश्रय करते हैं। उनमें से एक उस वृक्ष के पके हुए फल को स्वादुपन से खाता है और दूसरा न खाता हुआ सब ओर से देखता है।

अर्थात सुन्दर चलने-फिरने वाले वा क्रियाजन्य काम को जानने वाले व्याप्यव्यापक भाव से साथ सम्बन्ध रखते हुए मित्रों के समान वर्तमानजीव और ईश समान कार्यकारण-रुप-ब्रह्माण्ड-देह का आश्रय करते हैं। उन दोनों अनादि जीव-ब्रह्म में जो जीव है, वह पाप-पुण्य से उत्पन्न सुख-दुखात्मक भोग को स्वादुपन से भोगता है और दूसरा ब्रह्मात्मा कर्मफल को न भोगता हुआ, उस भोगते हुए जीव को सब ओर से देखता अर्थात् साक्षी है।

5. अनच्छये तुरगातु जीवमेजद् ध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम्।
जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः।।

मण्डल एक सूक्त 164 मन्त्र 30

अर्थ-जो ब्रह्मा शीघ्रगमन को पुष्ट करता हुआ जीवन को कंपाता और घरों के अर्थात् जीवों के शरीर के बीच निश्चल होता हुआ सोता है। जहां अनादित्व से मृत्यु धर्म रहित जीव अन्नादि और मरणधर्मा शरीर के साथ एक स्थानी होता हुआ मरण स्वभाववाले जगत् के बीच आचरण करता है, उस ब्रह्म में सब जगत बसता है। यह जानना चाहिए।

यजुर्वेद में आत्मा का स्वरूप

1. अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषं तदशकं तन्मेऽक्कराधीदमहं
यऽएवाऽस्मि सोऽस्मि

अध्याय 2, मन्त्र 28

अर्थ-हे न्याययुक्त नियत कर्मपालन करने हारे, सत्यस्वरूप परमेश्वर! आपने जो कृपा करके मेरे लिए सत्य लक्षण और प्रसिद्ध नियमों से युक्त सत्याचरण-व्रत को अच्छी प्रकार सिद्ध किया है। उस अपने आचरण करने योग्य सत्य-नियम को जिस प्रकार मैं करने को समर्थ होऊं अर्थात उसका अच्छी प्रकार आचरण कर सकूं, वैसा मुझको कीजिये। जो मैंने उत्तम व अधम कर्म किया है उसी को भोगता हूं। अब भी मैं जैसा करने वाला हूँ वैसे कर्म के भोगने वाला होता हूं।

2. अप्स्वग्ने सधिष्टव सोषधीरनु रुध्यसे।
गर्भे सन् जायसे पुनः।।

अध्याय 12, मन्त्र 36

अर्थ-हे अग्नि के तुल्य विद्वान जीव! जो सहनशील तू जलों में सोमलता, आदि औषधियों को प्राप्त होता है, वह गर्भ में स्थित होकर फिर-फिर जन्म-मरण तेरे हैं, ऐसा जान।

3. प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
संसृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः।। अध्याय 12, मन्त्र 38

अर्थ–हे प्रकाशमान पुरुष सूर्य के समान प्रशंसित प्रकाश से युक्त जीव! तू शरीर दाह के पीछे पृथिवी, अग्नि, आदि और जलों के बीच देह धारण के कारण को प्राप्त होकर माताओं के उदर में वास करके फिर शरीर को प्राप्त होता है।

4. वायोः पूतः पवित्रेण प्राङ्सोमोऽअतिद्रुतः।
इन्द्रस्य युज्यः सखा।। अध्याय 19, मन्त्र 3

अर्थ–हे मनुष्यों! जो सोमलतादि औषधियों का गुण प्रत्यक्ष शरीरों से युक्त होकर शीघ्रगामी वायु से शुद्ध करने वाले कर्म से पवित्र होकर इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव के साथ योग्य मित्र के समान रहता है, उस गुण का तुम निरन्तर सेवन किया करो।

5. न वाऽउऽएतन्म्रियसे न रिष्यसि देवां। अध्याय 25, मन्त्र 44

अर्थ–हे मनुष्यों! जो सोमलतादि औषधियों का गुण प्रत्यक्ष शरीरों से युक्त होकर शीघ्रगामी वायु से शुद्ध करने वाले कर्म से पवित्र होकर इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव के साथ योग्य मित्र के समान रहता है, उस गुण का तुम निरन्तर सेवन किया करो।

सत्यार्थ प्रकाश पठन–पाठन शिविर (ग्यारह दिवसीय)

स्थान : वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून (उत्तराखण्ड)

सान्निध्य–आचार्य पं. सोमदत्त आर्य जी

दिनांक 20 जुलाई से 30 जुलाई तक **कक्षा समय : प्रातः 10.30 से 12.30 तक**

नोटः आवास एवं भोजन हेतु 500/– रुपए प्रतिदिन प्रति व्यक्ति देय।

1. सत्यार्थ प्रकाश के वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक पक्ष को सरलता से समझने के लिए कक्षाएँ आयोजित की जा रही हैं।
2. इच्छुक जिज्ञासुजन इस सुअवसर का लाभ अवश्य उठाएँ।
3. इस काल में तपोवन आश्रम में रहकर प्रातःकालीन व सायंकालीन यज्ञ, सत्संग, भोजन तथा आवास आदि सुविधाओं का लाभ लेने के इच्छुक महानुभाव अधोलिखित फोन नम्बर पर सीधे सम्पर्क कर पंजीकरण व व्यवस्था विवरण प्राप्त कर लें।
4. कक्षा का लाभ उठाने के इच्छुक महानुभाव प्रातः 10.30 बजे अपने साथ संचिका (कॉपी) लेखनी (पैन) तथा पानी की बोतल अवश्य लाएँ।
5. आवास (Shared Room) प्रातराश, दो समय भोजन, दो बार चाय तथा शिविर हेतु देय धनराशि रु० 500/– प्रतिदिन।
6. सभी महानुभाव 19 जुलाई की शाम तक अथवा 20 जुलाई को प्रातः 9.30 बजे तक आश्रम में पहुँचने का कष्ट करें।
7. स्थानीय महानुभावों के लिए आश्रम में निवास करने की बाध्यता नहीं है, वे अपने आवास से भी आ सकते हैं।
8. विद्या अर्जन की वैदिक परम्पराओं को जीवित रखने के इच्छुक महानुभाव विद्या लाभ के लिए अन्तिम दिवस कृतज्ञता रूप अपनी स्वैच्छिक दक्षिणा दे सकते हैं। सधन्यवाद

निवेदक–मन्त्री, वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून, मो० 9412051586

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

* स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
* शॉक एब्जॉर्बर्स
* फ्रन्ट फोर्क्स
* गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उदयोगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लांट हैं – गुडगॉव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल-शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुडगॉव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

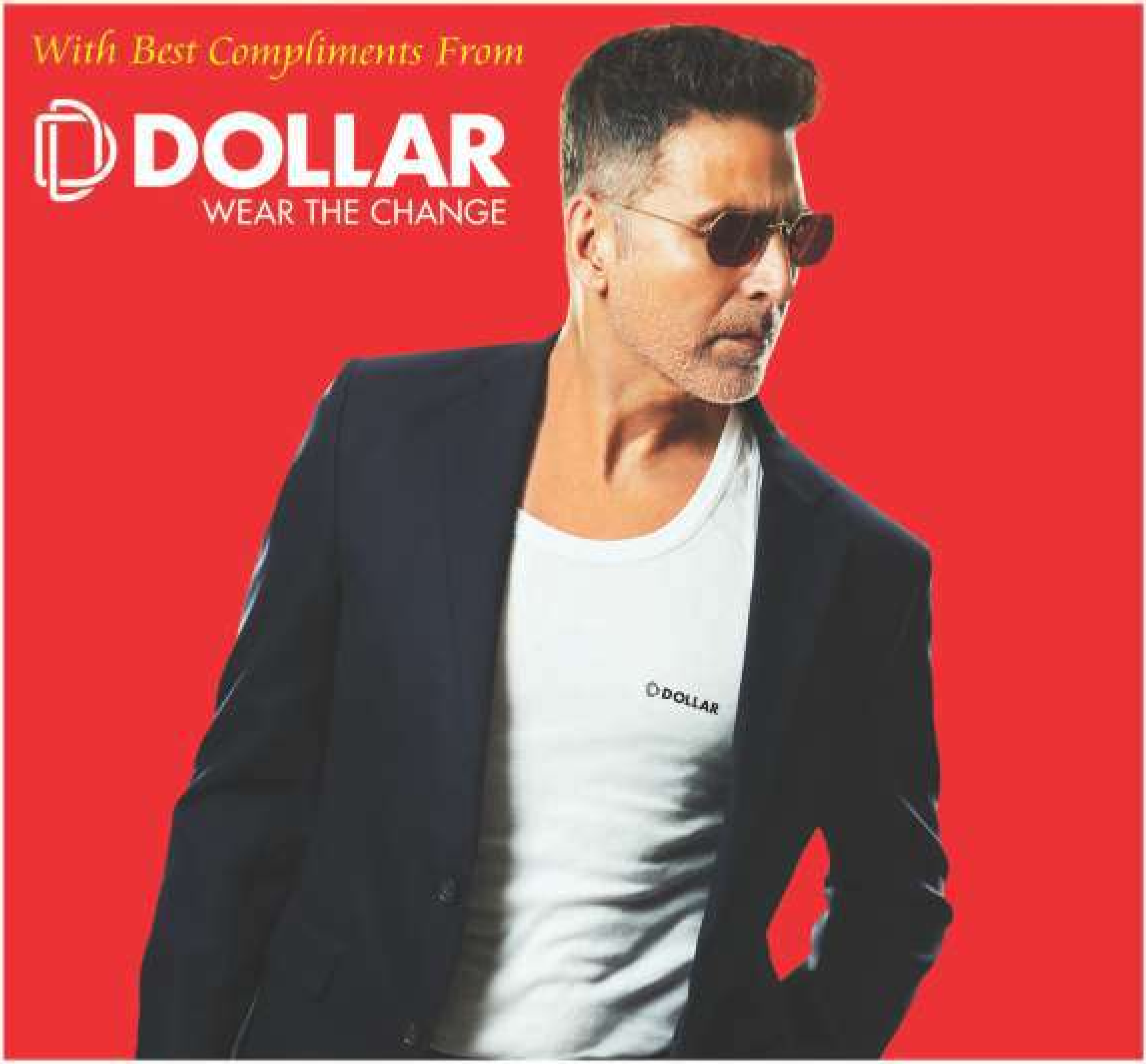

| www.dollarglobal.in | By Online: www.dollarshoppe.in | Also available at the all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBO across india | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

संपादक— कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री